चालाक ईकटोमी

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Chalak Eektomi (Cunning Iktomi)
Cover Page picture: Iktomi, The Spider Fairy
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of North America

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज की भूमिका 4

चालाक ईकटोमी 5

1 ईकटोमी कौन है? 7

2 ईकटोमी शहर आया 11

3 ईकटोमी और गिलहरियाँ 14

4 ईकटोमी और भैंस की खोपड़ी 17

5 ईकटोमी और कायोटी–**1** 19

6 ईकटोमी और कायोटी–**2** 24

7 ईकटोमी, कायोटी और चट्टान 32

8 ईकटोमी और बतखें 39

9 ईकटोमी और बड़ा चूहा 47

10 ईकटोमी और हिरन का बच्चा 55

11 ईकटोमी का कम्बल 67

12 ईकटोमी, दो बहिनें और लाल आलूबुखारा 74

13 ईकटोमी और कछुआ 80

14 सात लड़ने वाले 87

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

चालाक ईकटोमी

जैसा कि सबको पता है उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका का **1492** से पहले किसी को कोई पता नहीं था। वह दुनियॉ के नक्शे पर कहीं दिखायी नहीं देता था। लेकिन ऐसा नहीं था कि ये जमीन के टुकड़े वहॉ थे नहीं। ये जमीन के टुकड़े भी यहीं थे और यहॉ लोग भी रहते भी थे।

जब कोलम्बस ने इस धरती के टुकड़े को खोजा तो उसने यहॉ के रहने वाले मूल निवासियों को रेड इन्डियन्स का नाम दिया क्योंकि उस समय वह भारत का रास्ता ढूँढने निकला था और जब वह इस जमीन पर उतरा तो उसको लगा कि वह भारत या इन्डिया आ गया। बस उसने यहॉ के रहने वालों को रैड इन्डियन्स का नाम दे दिया।

जब तक पनामा कैनाल[1] नहीं बनी थी या खुली थी तब तक ये दोनों महाद्वीप, यानी उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका, दोनों महाद्वीप जमीन का एक ही टुकड़ा थे – अमेरिका। पनामा कैनाल बन जाने के बाद ही ये दोनों जमीन के टुकड़े अलग अलग हो पाये – उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका। दक्षिण अमेरिका को "लैटिन अमेरिका" भी कहते हैं।

यहॉ के मूल निवासियों में बहुत सारी जनजातियॉ[2] रहती थीं। इन सब जनजातियों की अपनी अपनी लोक कथाऐं थी अपने अपने विश्वास थे अपने अपने कानून थे। इनकी लोक कथाओं में कुछ जानवरों की लोक कथाऐं बहुत मिलती हैं जैसे कायोटी[3] जो एक छोटा सा रेगिस्तानी भेड़िया है या रैवन जो एक कौए जैसा पक्षी है।

इसी तरह से ईकटोमी भी यहॉ के मूल निवासियों की लोक कथाओं का एक बहुत ही लोकप्रिय चरित्र है जो बहुत चालाक[4] है। हर देश की लोक कथाओं में कुछ चालाक चरित्र होते हैं। ये जानवर भी हो सकते हैं और आदमी भी। यहॉ की लोक कथाओं में ईकटोमी एक ऐसा ही चरित्र है।

अमेरिका के मूल निवासियों में कई जनजातियॉ है, जैसे हायडा[5], नवाजो, जूनी आदि। उन्हीं में एक और जनजाति है लकोटा जनजाति[6]। ईकटोमी इसी लकोटा जनजाति की लोक कथाओं का एक मुख्य चरित्र है।

ईकटोमी की बहुत सारी लोक कथाऐं हैं – उनकी कोई कमी नहीं। यहॉ उसकी कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं। आशा है कि तुम लोगों को ये लोक कथाऐं पसन्द आयेंगी और लकोटा जनजाति के जीवन के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

---

[1] Panama Canal – opened on 15 August 1914, is a man-made 48-mile (77 km) waterway in Panama that connects the Atlantic Ocean with the Pacific Ocean. The canal cuts across the Isthmus of Panama and is a key conduit for international maritime trade. There are locks at each end to lift ships up to Gatun Lake, an artificial lake created to reduce the amount of excavation work required for the canal, 85 feet (26 metres) above sea level. The original locks are 110 feet (33.5 metres) wide.

[2] Translated for the word "Tribes"

[3] Raven, Iktomi, Zuni and Coyote

[4] Trickster

[5] Read the beliefs of Haida Tribe "Haida Jaati Ke Vishwaas" in Hindi by Sushma Gupta

[6] Lakota tribe

1 ईकटोमी कौन है?[7]

हर देश की लोक कथाओं में कुछ चालाक चरित्र होते हैं कुछ बेवकूफ चरित्र होते हैं और कुछ डरपोक चरित्र भी होते हैं। ये जानवर भी हो सकते हैं और आदमी भी।

जैसे नाइजीरिया और पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाओं में अनन्सी मकड़ा और कछुआ बहुत तेज़ और होशियार जानवर है। भारत की लोक कथाओं में खरगोश बहुत होशियार है और लोमड़ा बहुत चालाक है। वहाँ गीदड़ हमेशा से ही एक बेवकूफ और डरपोक जानवर समझा जाता है।

इसी तरह से अमेरिका के मूल निवासियों की लोक कथाओं में कुछ चालाक चरित्र हैं जैसे रैवन कौआ[8], ईकटोमी मकड़ा, जूनी और कायोटी भेड़िया[9]। इन सबका इनकी लोक कथाओं में अपना एक अलग ही स्थान है। और इन सबकी लोक कथाऐं वहाँ पायी भी बहुत जाती हैं।

अमेरिका के मूल निवासियों में कई जनजातियाँ है, जैसे नवाजो, जूनी, हायडा आदि। उन्हीं में एक और जनजाति है लकोटा

---

[7] Inyan, the Rock – Adapted from the Web Site : http://www.nativeamerican-art.com/lakota-legend.html .

[8] Read “Raven Ki Lok Kathayen-1” by Sushma Gupta in Hindi language. Bhopal, Indra Publishing House.

[9] Raven, Iktomi, Zuni and Coyote

जनजाति[10]। ईकटोमी[11] अमेरिका के मूल निवासियों की लकोटा जनजाति की लोक कथाओं का एक मुख्य और लोकप्रिय चरित्र है जो बहुत चालाक[12] है।

ईकटोमी इन्यान चट्टान[13] का सबसे बड़ा बेटा है। इन्यान का नाम पहले क्स[14] था। ईकटोमी एक अंडे से एक बड़े आदमी के साइज़ जितने रूप में ही पैदा हुआ था।

उसका शरीर मकड़े की तरह से बहुत बड़ा और गोल सा है और उसकी टॉगें पतली सी हैं। वह हिरन की खाल का कोट पहनता है। वह हर ज़िन्दा चीज़ से बात कर सकता है और साथ में चट्टानों और पत्थरों से भी।

वह लकोटा लोगों को इस बात का भी विश्वास दिला सकता है कि वे एक साथ रहने की बजाय अलग अलग रहें।

एक बार लकोटा लोगों पर दुश्मनों ने हमला कर दिया तो लकोटा लोगों ने एक मीटिंग की और यह निश्चय किया कि वे अपने घर एक गोले में बना कर रहेंगे।

उनके हर एक के घर का दरवाजा दूसरे के घर के दरवाजे के सामने खुलेगा ताकि उनको पता रहे कि ईकटोमी कब उनके घरों में घुस रहा है।

---

[10] Lakota Tribe

[11] Iktomi is a spider fairy – Iktomi is pronounced as ee-k-tomee

[12] Translated for the word “Trickster”

[13] Inyan Rock

[14] Ksa – former name of Inyan Rock. Inyan is the rock which is Iktomi’s great grandfather. It is the Primordial stone spirit of Sioux Tribe mythology

वाकिन्यान[15] की कहानी

वाकिन्यान का मतलब है गरज चिड़ा[16]। वाकिन्यान बहुत बड़े बड़े पंखों वाले लोग हैं जिनको लोग देख नहीं सकते क्योंकि वे घने बादलों में छिपे रहते हैं।

बिजली की यह कड़क जो हम सबको सुनायी देती है वह उन्हीं की आवाज है और यह जो आसमान में बिजली चमकती है यह उनका पलकें झपकाना है।

वाकिन्यान चार तरह के हैं – लाल, काले लम्बी चोंच वाले, पीले बिना चोंच वाले और नीले बिना कान और ऑख वाले। ये लोग अमेरिका के पश्चिम में रहते हैं और पश्चिमी हवा के साथ ही यात्रा करते हैं।

ये लोगों की वाज़िया यानी उत्तरी हवा[17] से रक्षा करते हैं। इन्होंने जंगली चावल और बहुत तरह की घास बनायी।

ईकटोमी इन लोगों के लिये हियोगा[18] की तरह है क्योंकि यह हमेशा उनके साथ बात करता रहता है।

---

[15] Wakinyan – name of a Tribe of Native Indians

[16] Translated for the word “Thunderbird” – he is the main character of Haida Tribe of North America. Read “Haida Tribe – beliefs”, by Sushma Gupta in Hindi language.

[17] Wazia, means North Wind – which is very cold. There are few folktales about it. To read folktales about it read “Uttaree Havaa” book by Sushma Gupta in Hindi language.

[18] Heyoka (pronounced as “he-yau-ga), in Lakota, is trickster spirit, jester, satirist, or sacred clown. The Heyoka spirit speaks, moves and reacts in an opposite fashion to the people around it. Translated as “North Wind” also an important character of these folktales. Its folktales are given in “Mausam Aur Hava kI Lok Kathayen”, written by Sushma Gupta in Hindi.

लकोटा जनजाति में इस मकड़े परी की एक खास जगह है। जब हम उसकी जानवर की तरह से बात करते हैं तो हम ईकटोमी मकड़े की ही बात करते हैं। ईकटोमी की बहुत सारी कहानियॉ हैं – उनकी कोई कमी नहीं।

2 ईकटोमी शहर आया[19]

एक दिन ईकटोमी हमेशा की तरह से भूखा इधर उधर घूम रहा था कि वह एक गॉव में आ निकला जो उसने कभी देखा नहीं था।

यह गॉव छोटा सा था और उस गॉव से कुछ ज़्यादा बड़ा नहीं था जो वह अभी अभी पीछे छोड़ कर आया था। वह उस गॉव में इधर उधर घूमने लगा ताकि वह वहॉ कुछ कर सके।

घूमते घूमते उसको एक बहुत ही मामूली आदमी मिल गया। उस आदमी को उस गॉव में कोई ज़्यादा जानता तो नहीं था पर उस आदमी में अपने लिये थोड़ा घमंड था।

ईकटोमी ने उससे कहा कि तुम्हारा तो इस गॉव में और लोगों से ज़्यादा आदर होना चाहिये। वह आदमी घमंडी तो था ही सो इस बात को तुरन्त ही मान गया।

ईकटोमी ने उसको एक पौधा दिखाया और बोला — "अगर तुम मुझको यह पौधा ला दो तो मैं तुमको ऐसी ताकत दे दूँगा जिससे तुम जो चाहो वह पा सकते हो।"

---

[19] Iktomi Comes to Town – a Native American folktale from Lakota Tribe, North America. Adapted from the Web Site : http://wiki.olc.edu/index.php/Iktomi_Stories .

यह सुन कर वह आदमी बहुत खुश हुआ और उस पौधे की खोज में चल दिया। पहले तो उसने उस पौधे को गॉव भर में ढूँढा। पर जब उसको वह पौधा अपने गॉव में नहीं मिला तो वह उसको ढूँढने के लिये गॉव से बाहर चला गया।

जब यह आदमी पौधा ढूँढने के लिये गया हुआ था तो ईकटोमी उसके घर गया और उसके परिवार से दोस्ती कर ली। वह आदमी जितनी ज़्यादा दूर उस पौधे की खोज में जाता गया ईकटोमी की दोस्ती उसके परिवार से उतनी ही ज़्यादा बढ़ती गयी।

एक साल के बाद वह आदमी ईकटोमी वाला पौधा ले कर घर वापस आया तो देखा कि ईकटोमी तो कहीं था ही नहीं। सो उसने सोचा कि वह उस पौधे को अपने घर ले जाता है।

जब वह अपने घर आया तो देखा कि उसका घर तो खाली पड़ा है। न तो उसकी पत्नी घर में थी और न ही बच्चे। वहॉ था तो ईकटोमी का लिखा हुआ केवल एक कागज।

उस कागज में लिखा था कि किस तरह जब वह आदमी अपने फायदे के लिये उसका बताया पौधा ढूँढने के लिये गया हुआ था तो ईकटोमी उसके घर गया और उसके परिवार के साथ दोस्ती कर ली।

उसमें आगे उसने यह भी लिखा था कि तुम जितने घमंडी हो उतने ही मतलबी भी हो। अपने मतलब के लिये जब तुम अपना घर

छोड़ कर चले गये तो समझो कि जो कुछ तुम्हारे पास था तुम अपना वह सब कुछ छोड़ कर चले गये।

यह उस कागज पर लिखी हुई आखिरी लाइन थी। वह आदमी समझ गया कि ईकटोमी उससे क्या कहना चाह रहा था।

3 ईकटोमी और गिलहरियॉ[20]

ईकटोमी हमेशा की तरह से आज भी बहुत भूखा था और खाने की खोज में इधर उधर भटक रहा था।

भटकते भटकते वह एक नदी के किनारे आ पहुँचा। वह सोचता जा रहा था कि कैसे उसको कुछ अच्छा सा खाना मिले। चलते चलते वह थक भी बहुत गया था सो वह एक जगह सुस्ताने के लिये बैठ गया।

बैठे बैठे उसकी निगाह कुछ गिलहरियों पर पड़ी जो पास के एक टीले के पास बार बार आ जा रही थीं। वे वहॉ उस टीले को खोदतीं, उसके अन्दर कुछ रख देतीं और फिर उसको ऊपर से ढक देतीं। यह सब करके वे फिर पानी के पास वाली झाड़ियों के पास आ जातीं।

ईकटोमी यह सब देख रहा था और बड़ी धीरज से इन्तजार कर रहा था कि शायद वह कोई गिलहरी पकड़ सके और उससे अपना पेट भर सके।

[20] Iktomi and the Squirrels – a Native American folktale from Lakota Tribe, North America. Adapted from the Web Site : http://wiki.olc.edu/index.php/Iktomi_Stories .

उसने कई बार उनको पकड़ने की कोशिश की पर वह किसी एक को भी नहीं पकड़ सका सो उसने उनको पकड़ने की कोशिश छोड़ दी।

असल में वह बहुत थका हुआ और भूखा था सो वह ज़्यादा मेहनत नहीं कर पा रहा था। पर अचानक ही उसको एक विचार आया।

वह उठ कर उस टीले की तरफ चल दिया जिस टीले के वे गिलहरियॉ चक्कर लगा रही थीं। वहॉ जा कर उसने उस जगह को खोदा जिसको उन्होंने पत्तियों और डंडियों से ढक रखा था ताकि वह यह देख सके कि वहॉ इन्होंने अपना क्या खजाना दबाया हुआ था।

उसने देखा कि वहॉ किसी तरह की बैरीज़[21] दबी हुई हैं। हालॉकि वे बैरीज़ वहॉ बहुत सारी थीं पर ईकटोमी क्योंकि बहुत भूखा था वह वे सारी बैरीज़ निकाल कर खा गया। जब उसका पेट भर गया तो वह नदी के किनारे चला गया और वहॉ जा कर जी भर कर पानी पिया।

[21] Berry is a wild fruit, small in size. They are of many types. In India we have Ber. In foreign vountries there are straw berrie, black berries, blue berries etc – see their picture above.

पर कुछ देर में ही उसको बेचैनी होने लगी। पानी से वे बैरी फूल रही थीं और वे खुद फूल कर उसके पेट को भी फुला रही थीं।

ये बैरीज़ जंगली थी जो पानी के किनारे उगती थीं। ये उन बैरीज़ के जैसी ही थी जैसी बैरीज़ का लोग पानी में उबाल कर उनका सूप बनाते हैं। उस बेचैनी की वजह से वह धूल में इधर उधर लोटने लगा।

उधर से दो लड़ने वाले गुजर रहे थे तो उन्होंने ईकटोमी को इस तरह धूल में बेचैनी से लोटते हुए देखा। तो उसमें से छोटे लड़ने वाले ने बड़े लड़ने वाले से पूछा — "यह इतनी धूल कहॉ से उड़ रही है?"

बड़े लड़ने वाले ने जवाब दिया — "चिन्ता न करो यह तो ईकटोमी है जो किसी काम का नहीं।"

तो यह थी ईकटोमी की कद्र।

4 ईकटोमी और भैंस की खोपड़ी[22]

एक बार ईकटोमी कहीं जा रहा था तो उसने गाने की आवाज सुनी। गाने की आवाज सुन कर उसका मन भी गाने और नाचने का हुआ पर वह यह नहीं जान सका कि वह गाने की आवाज आ कहॉ से रही है।

काफी इधर उधर ढूँढने के बाद उसको लगा कि वह आवाज तो उसके पास में पड़ी भैंस की एक खोपड़ी में से ही आ रही है। वह जब उस खोपड़ी के पास आया तो उसने उसकी ऑखों के अन्दर झॉक कर देखा तो उसने देखा कि उसके अन्दर तो कई चूहे नाच रहे थे।

उसने उनसे पूछा कि क्या वह भी उनके साथ नाच सकता है। पर फिर उसने उनके बिना कुछ कहे ही उस खोपड़ी की ऑख में अपना सिर दे दिया। इससे वे चूहे डर गये और डर के मारे वहॉ से भाग गये।

चूहों के भागने के बाद ईकटोमी ने अपना सिर उस खोपड़ी में से बाहर निकालने की बहुत कोशिश की पर वह उसे निकाल ही नहीं सका। खोपड़ी के इस तरह से अपने सिर में फॅस जाने से ईकटोमी को बहुत परेशानी हुई।

---

[22] Iktomi and the Skull of Buffalo – a Native American folktale from Lakota Tribe, North America. Adapted from the Web Site : http://www.nativeamerican-art.com/lakota-legend.html .

वह खोपड़ी को अपने सिर में फॅसाये फॅसाये ही एक चट्टान के पास पहुॅचा और उस खोपड़ी को उस चट्टान पर दे दे कर मारने लगा। वह उसे जब तक मारता रहा जब तक कि वह खोपड़ी टूट कर उसके सिर से निकल नहीं गयी।

पर इससे ईकटोमी का सिर बहुत घायल हो गया और वह बहुत दिनों तक बहुत बीमार और बेहोशी की हालत में रहा।

यह कहानी कई तरह से कही जाती है। इसके एक तरीके से कहने में ईकटोमी को यह सलाह दी गयी कि वह खोपड़ी को पानी में डुबोये ताकि वह मुलायम हो जाये और फूल कर बड़ी हो जाये। उसने यह सलाह मानी और वह पानी में डूब गया।

एक दूसरे तरीके से कहने में उसको कहा गया कि वह आग जलाये और उसमें खोपड़ी जला दे। जब उसने ऐसा किया तो वह खुद भी उसमें जल कर मर गया।

5 ईकटोमी और कायोटी–1[23]

मैदान में ऊपर सूरज बहुत ज़ोर से चमक रहा था। नीचे हरी घास पर बेकार की लम्बी लम्बी बेलें फैलीं पड़ीं थीं। ईकटोमी[24] अपनी हिरन की खाल में चमकीले नंगे सिर धूप में उस घास के मैदान में अकेला घूम रहा था।

वह घास में बिना किसी साफ सुथरी पगडंडी के ही चला जा रहा था। चारों तरफ वह बेकार वाली घास में धीरे धीरे पॉव रखता चला जा रहा था कि वह बेकार वाली घास के एक बड़े से गुच्छे के आने से पहले ही रुक गया।

उसने अपने सिर को इस कन्धे से उस कन्धे तक घुमाया। थोड़ा और आगे बढ़ कर वह पहले एक तरफ घूमा, फिर दूसरी तरफ घूमा, और फिर यह देखने के लिये थोड़ा और आगे जा कर रुक गया कि आखिर उस घास के पीछे छिपे फ़र के कोट के नीचे क्या था।

वह था एक पतला सा छोटा सा भेड़िया। उसकी नुकीली काली नाक उसके चारों पैरों के बीच में घुसी हुई थी। उसकी सुन्दर घनी

---

[23] Iktomi and Coyote - a folktale of Native American Indians. Adapted from the Book : "Old Indian Legends", by Zitkala-Sa. Boston, Ginn and Company. 1901. Its 14 stories are on http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Native_American_Folktale_40.html

[24] Iktomi is a spider fairy, pronounced as "Ee-k-tomee". See its picture above.

पूँछ उसकी नाक और पैरों के चारों ओर लिपटी हुई थी। एक कायोटी[25] उस घनी घास में छाँह में गहरी नींद सो रहा था। ऐसा ईकटोमी ने देखा।

बिना आवाज किये उसने पहले एक कदम उठाया, फिर दूसरा और फिर धीरे धीरे चलता हुआ उस फ़र की गेंद के पास आ गया जो वहाँ सो रही थी। अब ईकटोमी कायोटी के बिल्कुल पीछे खड़ा था और उसकी बन्द पलकों की तरफ देख रहा था जो ज़रा सी भी नहीं हिल रहीं थीं।

ईकटोमी ने पहले अपने होठ दबाये, फिर धीरे से सिर हिलाया और उसके बाद उस भेड़िये की तरफ देखा। फिर वह अपना कान उसकी नाक के पास ले गया तो उसको तो कायोटी की साँस भी महसूस नहीं हुई।

आखिर वह बोला — "यह तो लगता है कि मर गया। मर तो गया पर लगता है कि इसे मरे बहुत देर नहीं हुई है क्योंकि इसके पंजे में तो अभी भी ताज़ा पंख लगा हुआ है। यह तो अच्छा मोटा माँस है।"

कहते हुए और उसका वह पंजा पकड़ते हुए जिसमें उसने पंख पकड़ रखा था वह बोला — "अरे इसका तो पंजा भी अभी गरम

[25] Coyote is a small desert wolf and a hero of many Native Americns' folktales – see its picture above.

है। मैं इसको अपने घर ले जाता हूँ और शाम को इसको भून कर खाऊँगा। हा हा हा।" कह कर वह हँस दिया।

उसने कायोटी को उसके आगे वाले दोनों पंजों से पकड़ लिया और उसके दोनों पिछले पंजों को अपने कन्धे पर डाल लिया। वह भेड़िया बहुत बड़ा था और इकटोमी का घर वहाँ से काफी दूर था।

ईकटोमी धीरे धीरे अपना बोझ ले कर और कायोटी के माँस के स्वाद का आनन्द लेता हुआ चला। वह अपनी आँखें मिचकाता जा रहा था ताकि उसकी आँखों का नमकीन पानी उसके चेहरे पर न आये।

इस पूरे समय में कायोटी अपनी आँखें खोले खुले आसमान की तरफ देखता रहा और अपने चमकीले दाँत निकाल कर हँसता रहा।

वह अपने मन में कह रहा था — "अपने पैरों पर चलना तो थका देने वाला होता है पर अगर कोई किसी के कन्धे पर चढ़ कर जाता है जैसे कि लड़ाई का कोई लड़ने वाला जीत कर जाता है तो वह तो कितना अच्छा है।"

वह आज से पहले इस तरह से किसी के कन्धे पर चढ़ कर नहीं गया था इसलिये यह नया अनुभव तो उसको बहुत ही अच्छा लग रहा था।

वह ईकटोमी के कन्धे पर सुस्ती से पड़ा रहा। बस कभी कभी अपनी पलकें झपका लेता था। कायोटी को नींद भी आ रही थी

और उसको अपने ऊपर थोड़ा घमंड भी हो रहा था कि वह ईकटोमी के कन्धे पर चढ़ कर जा रहा था।

ईकटोमी अब करीब करीब अपने घर आ पहुँचा था और कायोटी भी अब पूरी तरह से जाग चुका था क्योंकि थोड़ी ही देर में वह इकटोमी के हाथ से फिसल जाने वाला था।

सो उसने फिसलना शुरू किया और वह नीचे इतनी ज़ोर से गिरा कि कुछ देर तक तो उसे साँस ही नहीं आयी।

वह यह सोचते सोचते कि अब ईकटोमी उसका क्या करेगा चुपचाप वहीं पड़ा रहा जहाँ गिरा था। कभी कभी वह किसी गाने की धुन गुनगुना लेता था। उधर ईकटोमी एक बहुत बड़ी दावत और नाच के बारे में सोच रहा था।

उसने जा कर सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उनको अपने घुटने की सहायता से दो दो टुकड़ों में तोड़ दिया। फिर उसने अपने घर के बाहर एक बहुत बड़ी आग जलायी।

जब उसमें से लाल पीली लपटें उठने लगीं तो वह कायोटी के पास लौटा। कायोटी अपनी पलकों के बालों के बीच में से सब देख रहा था।

ईकटोमी कायोटी को उसके आगे और पीछे वाले पंजों से पकड़ कर झुलाता हुआ आग के पास लाया और उसको आग में फेंक दिया। पर कायोटी फिर बीच में ही गिर गया।

उसके नथुनों में गरम हवा घुसी जा रही थी। उसकी ऑखों के सामने आग की लपटें नाच रहीं थी। वह कुछ अंगारों से छू गया तो तुरन्त ही वहॉ से कूद गया। जैसे ही वह कूदा तो कुछ अंगारे उसके पैरों से छू कर ईकटोमी की नंगी बॉहों और कन्धों पर आ कर गिर गये।

ईकटोमी तो कुछ बोल ही नहीं सका। उसको लगा कि कोई आत्मा आग में से निकल कर आ रही थी। उसका तो मुँह खुला का खुला ही रह गया। उसने पाम का एक पत्ता उठा कर कायोटी के चेहरे पर ज़ोर से मारा। वह उसको चिल्लाने से रोकना चाहता था।

कायोटी ने घास में लुढ़क कर और सिर को जमीन पर मल कर अपने बालों में लगी आग बुझायी। ईकटोमी तो यह सब देखता का देखता ही रह गया और अपने जलते हुए कन्धे और बॉहों को फूँक मार मार कर ठंडा करता रहा।

उधर कायोटी आग के दूसरी तरफ ईकटोमी के सामने बैठ कर हॅसता रहा फिर बोला — "कोई बात नहीं ईकटोमी, अगली बार सही।

तुमको आग जलाने से पहले ही यह निश्चय कर लेना चाहिये था कि तुम्हारा दुश्मन मर गया है या नहीं।"
इतना कह कर वह बहुत तेज़ी से वहॉ से भाग गया।

6 ईकटोमी और कायोटी–2[26]

एक बार ईकटोमी[27] कहीं जा रहा था। चलते चलते वह बोलता जा रहा था — "हलो हलो, मैं ईकटोमी हूँ। तुम सब मुझे जानते हो। मैं कल व्हाइट हाउस[28] में था क्योंकि अमेरिका के प्रेसीडैन्ट को मेरी सलाह चाहिये थी।

यह कल की बात है पर आज मैं स्कूल में बच्चों के लिये पढ़ने के लिये जा रहा हूँ। मैं उनके लिये वे किताबें पढ़ूँगा जिनमें मेरे बहादुरी के कारनामे और मेरी दया की कहानियाँ लिखी हुई हैं। हर एक ने उनको पढ़ रखा है क्योंकि मैं बहुत मशहूर हूँ।

मैंने अपनी रीति रिवाजों के अनुसार कपड़े पहन रखे हैं। आज मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा है। मैं अच्छा दिखायी भी दे रहा हूँ।

बच्चे मुझे देख कर मुझसे बहुत प्रभावित होंगे। मुझे मालूम है कि मैं देखने में अच्छा लगता हूँ क्योंकि मैं उसी तरह का लग रहा हूँ जैसा कि मैं इन किताबों में लगता हूँ।"

---

[26] Iktomi and the Coyote – a story of Native American Indians, North America.
Adapted from the book : "Iktomi and the Coyote: a plains Indian story". by Paul Goble. NY, Orchard Books. 26 p.
[This story is similar to the story "Skunk Ne Coyote Ko Pachhada" story given in the book entitled "Chipmunk, Mink Aur Skunk" by Sushma Gupta written in Hindi laguage.]

[27] Iktomi is a spider fairy but can take any form. Pronounced as Ee-k-tomee.

[28] White House is the residence of US President.

"मुझे देख कर बच्चों को लगेगा कि बहुत बहुत बहुत पहले हमारे पुरखे कैसे कपड़े पहना करते थे। हालॉकि उनको यह भी कहना पड़ेगा कि मैं अपने पुरखों से ज़्यादा अच्छा लग रहा हूँ।"

"मैं बच्चों को बताऊँगा कि भैंसों के दिनों में हम लोग कैसे रहते थे। अब तो केवल मैं ही एक बड़ा बचा हूँ न।"

तभी ईकटोमी को किसी की हँसी की आवाज और ऊँचे सुर में गाने की आवाज सुनायी पड़ी। वह बोला — "अरे, यह क्या है?"

उसने इधर देखा उधर देखा पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। फिर उसको वह आवाज और गाने की आवाज दोबारा सुनायी दी तो उसने अपने मन में सोचा — "अरे, देखो तो, वे तो घास के मैदानों के कुत्ते[29] हैं।

ओह, ये घास के मैदानों के कुत्ते खाने के लिये तो मुझे अब भूख भी लग आयी है। घास के मैदान के भुने कुत्ते से बढ़ कर स्वादिष्ट खाना तो कहीं है ही नहीं। पर अब मैं उनको पकडूँ कैसे?"

सो वह धीरे धीरे उनकी तरफ बढ़ा। वे कुत्ते एक खेल खेल रहे थे। एक एक करके वे आग की गरम राख में गरदन तक धँस जाते थे।

[29] Although Iktomi was calling them prairie dogs, but in reality they were not the prairies dogs, they were the ground squirrels.

वे कोई खास गाना गा रहे थे जिससे वे उस गरम राख में भी जलते नहीं थे। पर जब वे और ज़्यादा नहीं सह पाते थे तो वे अपने साथियों को पुकारते थे और वे उनको उस गरम राख में से खींच लेते थे।

वे सब खूब हॅस रहे थे और अपने खेल का खूब आनन्द ले रहे थे। ईकटोमी बोला — "ओ मेरे छोटे भाइयों, तुम क्या ही अच्छा खेल खेल रहे हो – राख में दब जाना और फिर उससे जलना भी नहीं। मैं भी यह खेल खेलना चाहता हूँ। मुझे भी राख में गाड़ दो।"

वे सब चिल्लाये — "ओह नहीं ईकटो। तुम जल जाओगे। पहले तुमको हमारा गीत सीखना पड़ेगा ताकि तुम जल न सको। अब तुम हमको ध्यान से सुनो और फिर हमारा गीत सीखो तब हम तुमको राख में गाड़ देंगे।"

ईकटोमी बोला — "यह तो ठीक है पर मेरे पास इससे एक और ज़्यादा अच्छा विचार है। क्यों न मैं तुम सबको राख से ढक दूँ – सबको एक साथ।

इस तरह से तुम्हारे गीत की आवाज इतनी तेज़ हो जायेगी कि मैं उसे अच्छी तरह से सुन सकूँगा। जब तुम उसमें से निकलना चाहो तो बस चिल्ला देना "बाहर", और मैं तुमको बाहर निकाल लूँगा।"

वे सब एक साथ बोले — "ईकटो तुम कितना अच्छा सोचते हो।"

सो वे सब घास के मैदान के कुत्ते जल्दी से उसी तरह से एक साथ लेट गये, एक के बाद एक, जैसे मटर की फली में मटर के दाने लगे रहते हैं।

ईकटोमी को उनको गरम राख से ढकने के लिये काफी काम करना पड़ा। जब तक वह उन कुत्तों को गरम राख से ढकता रहा वे कुत्ते अपनी सबसे तेज़ आवाज में अपना गीत गाते रहे।

ईकटोमी उनको राख से ढकता जा रहा था और मन ही मन हॅसता हुआ उनसे कहता जा रहा था — "जब तुम्हें बाहर निकलना हो तो बस "बाहर" चिल्ला देना।"

थोड़ी देर बाद कुत्तों ने बाहर निकालने के लिये चिल्लाना शुरू किया पर ईकटोमी ने उनके चिल्लाने पर कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि वह तो उन पर और जल्दी जल्दी गरम राख डालने लगा।

घास के मैदान वाले कुत्तों ने उससे उनको बाहर निकालने के लिये बहुत प्रार्थना की। एक ने तो उससे दया की भीख भी मॉगी क्योंकि वह जल्दी ही अपने बच्चों को जन्म देने वाली थी।

ईकटोमी बोला — "ठीक है।" और उसने आ कर उसको बाहर निकाल दिया। फिर वह उससे बोला — "जाओ और आराम से रहो तो और ज़्यादा घास के मैदान वाले कुत्ते होंगे।"

फिर ईकटोमी ने अपना दिल थोड़ा कड़ा कर लिया। उसने उन कुत्तों की चिल्लाहटों के लिये अपने कान बन्द कर लिये। और वे

घास के मैदान के कुत्ते तब तक उस राख में भुनते रहे जब तक वे मर नहीं गये। उफ़, क्या यह भयानक नहीं है?[30]

जब ईकटोमी को लगा कि वे अब अच्छी तरह से भुन गये हैं तो उसने उनको राख में से निकाल लिया और एक विलो के पेड़[31] की डंडियों पर ठंडा होने के लिये रख दिया और खुद एक पत्थर पर बैठ गया।

उन भुने हुए कुत्तों को देख कर उसके मुँह में पानी आ रहा था। जैसे ही वह अपना पहला कौर काटने जा रहा था कि उसने देखा कि कायोटी[32] तो उसी की तरफ चला आ रहा था।

वह सोच रहा था कि "मैं कितनी भी कोशिश क्यों न करूँ पर मैं कायोटी को पसन्द नहीं कर सकता।"

कायोटी तो सचमुच में ही बहुत दुखी, बीमार और भूखा दिखायी दे रहा था। उसके शरीर पर कई पट्टियाँ बँधी हुई थीं और वह बड़े दर्द के साथ लँगड़ाता हुआ तीन टाँगों पर चल रहा था।

---

[30] Since then prairie dogs' tails have had burned-black tips and they have never again trusted two-legged, or let them get close to them.

[31] Willow tree – if you burn green willow sticks you will notice that they are still soaked with grease.

[32] Coyote is a small desert wolf. He is the hero of many Native American Indian's folktales. His many stories are given in the book entitled "Chalak Coyote-1", by Sushma Gupta written in Hindi language.

कायोटी बोला — "ओह ईकटो, मेरे बड़े भाई, मुझे बहुत ही कमजोरी महसूस हो रही है। मेहरबानी करके मुझे खाने के लिये थोड़ा सा मॉस दे दो। मैंने बहुत समय से कुछ खाया नहीं है।"

ईकटोमी बड़े कड़े दिल से जवाब दिया — "कभी नहीं। एक कौर भी नहीं। यह खाना मेरा है और यह सारा का सारा खाना मेरा है। चले जाओ यहॉ से।" पर फिर ईकटोमी का इरादा बदल गया।

वह बोला — "ठीक है, मैं बहुत ही न्याय प्रिय आदमी हूॅ। मैं तुमको एक मौका देता हूॅ। हम लोग एक जुआ खेलते हैं। हम दोनों उस पहाड़ी के चारों तरफ दौड़ते हैं जो कोई भी जीत जायेगा वह इस सारे मॉस को ले लेगा।"

कायोटी बोला — "ठीक है मेरे छोटे भाई।"

ईकटोमी फिर बोला — "तुम्हारी तबियत तो मुझे कुछ ठीक नहीं लगती सो न्याय से भरी दौड़ दौड़ने के लिये मैं यह पत्थर जिस पर मैं बैठा हुआ हूॅ उठा कर दौडूॅगा और तुम ऐसे ही दौड़ना।"

सो उसने वह पत्थर अपने एक कम्बल में लपेट लिया और अपने कन्धे पर लटका लिया। फिर वह एकाएक बोला — "एक, दो, तीन.... ।"

और फिर जितना तेज़ वह दौड़ सकता था दौड़ लिया। वह पत्थर उसकी कमर पर हिलता जा रहा था – ऊपर नीचे, ऊपर

नीचे। हर कदम पर वह हिलता हुआ पत्थर उसकी कमर पर लग रहा था।

कायोटी उसके पीछे पीछे चिल्लाया — "रुक जाओ ईकटो, ज़रा रुको।" पर ईकटोमी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

"ईकटो, मेरे दोस्त। मुझे छोड़ कर मत जाओ।"

जब ईकटोमी ने पहाड़ी के दूसरी तरफ का चक्कर लगाना शुरू किया तो कायोटी उससे बहुत पीछे था। वह बेचारा बड़ी दीन आवाज में चिल्लाया — "ज़रा मेरा इन्तजार तो करो ईकटो।"

जब ईकटोमी पहाड़ी के पीछे ऑखों से ओझल हो गया तो कायोटी ने अपनी सारी पट्टियॉ खोल दीं और उन घास के मैदान वाले कुत्तों को खाने के लिये दौड़ गया। क्योंकि बीमार होने का तो वह केवल बहाना कर रहा था। वह तो बिल्कुल ठीक था।

कायोटी वे भुने हुए कुत्ते खाता जा रहा था और चिल्ला चिल्ला कर अपने रिश्तेदारों को सुना सुना कर कहता जा रहा था — "खाना खाना खाना। आओ और खाना खालो। देखो यहॉ कितना सारा खाना है।"

उसके बहुत सारे रिश्तेदारों ने उसकी आवाज सुनी और भागे चले आये। उसके दूसरे रिश्तेदार जैसे कौआ, गरुड़, मैना आदि भी वहॉ दावत खाने आ गये। जो टुकड़े उन लोगों के खाने से गिर गये थे वे चूहे ने साफ कर दिये।

जब ईकटोमी पहाड़ी के दूसरी तरफ दिखायी दिया तो उसने देखा कि उसको तो धोखा दिया गया है। वह वहीं से चिल्लाया — "थोड़ा सा मॉस मेरे लिये भी छोड़ दो ओ कायोटी, थोड़ा सा मॉस मेरे लिये भी छोड़ दो।"

ईकटोमी हॉफता हुआ बोला — "यह नाइन्साफी है कायोटी। तुमने तो मेरे लिये बिल्कुल भी मॉस नहीं छोड़ा। तुमने तो मुझे एक मौका भी नहीं दिया।"

कायोटी मुस्कुराते हुए और मॉस चाटते हुए बोला — "मैंने तो तुमको वैसा ही न्याय से भरा मौका दिया जैसा तुमने घास के मैदान वाले कुत्तों को दिया था।"

कायोटी को जब लगा कि उसने काफी खा लिया है तो वह वहॉ से भाग लिया।

ईकटोमी चिल्लाया — "ज़रा तुम रुको तो सही। तुम चोरी करते हो। तुम किसी काम के नहीं हो। मैं तुम्हें देख लूँगा।"

और फिर इकटोमी अपने रास्ते चला गया क्योंकि सारे कुत्ते तो कायोटी और उसके रिशतेदार खा गये थे। अब वहॉ कुछ बचा ही नहीं था।

बच्चो तुम क्या सोचते हो कि बाद में ईकटोमी ने कायोटी का क्या देखा होगा।

7 ईकटोमी, कायोटी और चट्टान[33]

एक बार कायोटी अपने दोस्त ईकटोमी के साथ कहीं जा रहा था कि उनके रास्ते में इन्यान चट्टान[34] पड़ी। यह कोई साधारण चट्टान नहीं थी बल्कि एक खास चट्टान थी।

उस पूरी चट्टान के ऊपर हरी काई की मकड़े की तरह की लाइनें बनी हुई थीं जो उसकी कहानी बता रही थीं कि वह इन्यान चट्टान थी और उसके पास ताकत थी।

कायोटी उसकी तरफ देखता हुआ बोला — "अरे वाह। यह तो बड़ी सुन्दर चट्टान है। मुझे लगता है कि इसके पास जरूर कुछ ताकत है।"

यह कह कर कायोटी ने अपना ओढ़ा हुआ कम्बल उतारा और उसे उस चट्टान को ओढ़ा दिया और बोला — "ओ इन्यान मेरे दोस्त, यह लो मेरी तरफ से एक भेंट। तुमको ठंड लग रही होगी। इस कम्बल से तुम ठंड से बच पाओगे।"

ईकटोमी बोला — "अरे वाह यह तो बड़ा अच्छा दान है। दोस्त तुम तो आज लगता है देने के मूड में हो।"

---

[33] Iktomi, Coyote and the Rock – a foltale from Lakota Tribe of Native Indians of North America. Taken from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/Iktome-Coyote-And-The-Rock-Sioux.html

[34] Inyan Rock is the rock which is Iktomi's great grandfather. It is the Primordial stone spirit of Sioux Tribe mythology.

कायोटी बोला — "अरे यह तो कुछ भी नहीं है मैं तो हमेशा कुछ न कुछ देता ही रहता हूँ। यह इन्यान तो मेरा कम्बल ओढ़े हुए बहुत ही अच्छा लग रहा है।"

ईकटोमी बोला — "तो अब तो यह कम्बल इसका हो गया।"

इन्यान को कम्बल ओढ़ा कर दोनों दोस्त आगे चल दिये। कुछ ही देर में ठंडा हो गया और बारिश होने लगी। फिर ओले भी पड़ने लगे। कायोटी ओर ईकटोमी दोनों बारिश और ओलों से बचने के लिये एक गुफा में चले गये जो ठंडी भी थी ओर गीली भी।

ईकटोमी तो ठीक था क्योंकि उसने भैंस की मोटी खाल का कोट पहना हुआ था पर कायोटी केवल एक कमीज पहने था। वह इस ठंड में कॉप रहा था। वह जमा जा रहा था। ठंड के मारे उसके दॉत बज रहे थे।

कायोटी अपने दोस्त ईकटोमी से बोला — "ओ मेरे दोस्त कोला[35] ज़रा उस चट्टान के पास जा कर मेरा कम्बल तो ले आओ। उस चट्टान को तो उसकी जरूरत नहीं है पर मुझे अब उसकी जरूरत है। वह तो बरसों से वहॉ बिना कम्बल के ही पड़ी हुई है। जल्दी करो मैं तो बिल्कुल जमा जा रहा हूँ।"

सो ईकटोमी वापस इन्यान चट्टान के पास गया ओर उससे बोला — "मेहरबानी करके क्या आप मुझे वह कम्बल वापस कर सकते हैं?"

[35] Cola – knickname of Iktomi

चट्टान बोली — "नहीं नहीं। मैं इसे वापस नहीं दूँगा। यह कम्बल तो मुझे बहुत अच्छा लगा। और फिर जो कुछ भी दे दिया गया वह दे दिया गया उसे वापस थोड़े ही माँगा जाता है।"

ईकटोमी यह सुन कर वापस कायोटी के पास आया और उसे सब बताया कि अब वह चट्टान तो उस कम्बल को वापस नहीं कर रही।

कायोटी को यह सुन कर गुस्सा आ गया वह बोला — "यह तो कोई अच्छी बात नहीं है। यह चट्टान तो बड़ी बेईमान निकली। क्या उसने वह कम्बल पैसे दे कर खरीदा था या फिर उसने उस कम्बल के लिये कोई काम किया था? मैं खुद जाता हूँ और उससे वह कम्बल ले कर आता हूँ।"

ईकटोमी बोला — "दोस्त टुन्का[36], इस इन्यान चट्टान के पास बहुत ताकत है। अच्छा होगा अगर तुम उसको वह कम्बल रख लेने दो।"

"क्या तुम पागल हो गये हो? यह तो मेरा बहुत सारे रंगों का बना बहुत ही मोटा और कीमती कम्बल है। मैं जा कर उससे बात करके आता हूँ और अपना कम्बल वापस ले कर आता हूँ।"

कह कर कायोटी वापस चट्टान के पास गया और उससे बोला — "ओ चट्टान यह सब क्या है? तुमको यह कम्बल किसलिये चाहिये? इसको तुम मुझे अभी अभी वापस कर दो।"

[36] Tunka – knickname of Coyote

चट्टान बोली — "नहीं मैं इसे वापस नहीं करूँगा। जो चीज़ एक बार दे दी गयी तो दे दी गयी।"

कायोटी गुस्सा हो कर बोला — "तुम तो बहुत ही बुरी चट्टान हो। क्या तुमको इस बात का ज़रा सा भी खयाल नहीं है कि मैं ठंड से कितना सिकुड़ रहा हूँ। मैं तो जम कर मरा जा रहा हूँ।"

कह कर कायोटी ने उस चट्टान से अपना कम्बल एक झटके के साथ छीन लिया और उसे खुद ओढ़ लिया और बोला — "बस यही ठीक है।"

चट्टान बोला — "नहीं यह ठीक नहीं है।"

पर कायोटी उसको अनसुना करते हुए अपनी गुफा की तरफ चल दिया। इतनी देर में बारिश और ओले सब रुक गये थे और सूरज फिर निकल आया था सो ईकटोमी और कायोटी दोनों अपनी गुफा के सामने ही बैठ गये।

वे दोनों वहाँ बैठ कर धूप का आनन्द ले रहे थे और पैमीकैन[37], तली हुई डबल रोटी, बैरी का सूप आदि खा पी रहे थे। खा पी कर वे अपने अपने पाइप पीने लगे।

कि अचानक ईकटोमी बोला — "अरे यह शोर कैसा है?"

कायोटी कुछ सुनता हुआ बोला — "कहाँ कैसा शोर? मुझे तो कुछ सुनायी नहीं दे रहा।"

[37] Pemmican is a diet of Native Americans living in Alaskan Tundra region. It is made up of sea animals with no vegetables whatsoever.

ईकटोमी बोला — "जैसे दूर कोई किसी को तोड़ता फोड़ता और कुचलता चला आ रहा हो।"

कायोटी ने फिर कुछ सुनने की कोशिश की और बोला — "हॉ दोस्त अब मुझे भी कुछ सुनायी दे रहा है।"

ईकटोमी बोला — "दोस्त कायोटी यह आवाज तो अब और पास आती जा रही है और ज़्यादा तेज़ भी होती जा रही है। ऐसा लग रहा है जैसे या तो यह कोई बिजली की कड़क हो या फिर भूचाल आ रहा हो।"

"हॉ यह तो बहुत तेज़ है पता नहीं यह किसकी आवाज है।"

ईकटोमी बोला — "मुझे पता है कि यह किसकी आवाज है।"

तभी उन दोनों ने देखा कि एक चट्टान लुढकती हुई उन्हीं की तरफ चली आ रही है। अरे यह तो इन्यान चट्टान है जो लुढ़कती हुआ, बिजली की कड़क की आवाज करती हुआ, अपने रास्ते में आयी हुई सब चीज़ों को कुचलती हुई उन्हीं की तरफ चली आ रही है।

ईकटोमी चिल्लाया — "दोस्त भागो यह इन्यान तो हमको मारने के लिये आ रहा है।"

सो दोनों जितनी जल्दी वहॉ से भाग सकते थे भाग लिये। चट्टान उनके पीछे भागती रही और उनके और पास और और पास आती रही।

ईकटोमी फिर चिल्लाया — "हमको यह नदी तैर कर पार कर लेनी चाहिये कायोटी। मुझे यकीन है कि यह चट्टान तो बहुत भारी है यह इस पानी में नहीं तैर सकेगी ओर डूब जायेगी।"

सो वे दोनों तैर कर नदी पार करने लगे। पर इन्यान जैसी बड़ी चट्टान ने भी तैर कर नदी पार कर ली। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह चट्टान पत्थर की नहीं बल्कि लकड़ी की बनी हो।

अब कायोटी चिल्लाया — "ईकटोमी इन बड़े पेड़ों में घुस जाओ! मुझे यकीन है कि यह चट्टान इस घने जंगल में नहीं घुस पायेगी।"

सो वे जंगल में पेड़ों में चले गये पर वह बड़ी इन्यान चट्टान तो जंगल के किनारे भी नहीं रुकी। वह अपने दॉये बॉये लगे उन बड़े बड़े पाइन के पेड़ों को रौंदती हुई उनके पीछे पीछे चलती चली आ रही थी।

अब कायोटी और ईकटोमी दोनों बाहर मैदान में निकल आये थे। ईकटोमी फिर चिल्लाया "उफ़ उफ़। दोस्त कायोटी यह मेरी लड़ाई नहीं है। मुझे अभी याद आया कि मुझे तो किसी जरूरी काम से जाना था। ठीक है फिर मिलते है।"

सो ईकटोमी एक छोटी सी गेंद के रूप में सिकुड़ गया और मकड़ा बन गया। पास में उसे एक चूहे का बिल दिखायी दे गया तो वह उसमें घुस गया और गायब हो गया।

अब कायोटी अकेला रह गया वह फिर भागा। वह बड़ी चट्टान भी उसके पीछे पीछे भागी आ रही थी। वह पास आ कर कायोटी के ऊपर चढ़ गयी और उसको करीब करीब चौरस कर दिया। फिर उसने अपना कम्बल उठाया और वापस चली गयी।

एक घोड़ा पालने वाला वहॉ से अपने घोड़े पर बैठा गुजर रहा था तो उसने कायोटी को वहॉ चौरस पड़ा देखा तो उसको लगा कि वहॉ कोई कालीन पड़ा है।

उसने उसको उठाते हुए कहा — "अरे यह तो कितना सुन्दर कालीन है।" वह उसको अपने घर ले गया और अपने कमरे में आग जलाने की जगह ले जा कर बिछा दिया।

जब कभी कायोटी मरता है तो वह फिर से ज़िन्दा हो जाता है। पर इस बार उसको अपनी पुरानी शक्ल में आने में सारी रात लग गयी।

सुबह को उस घोड़े पालने वाले की पत्नी अपने पति से बोली — "अरे यह क्या? मैंने अभी अभी तुम्हारे कालीन को यहॉ से भागते हुए देखा है।"

8 ईकटोमी और बतखें[38]

एक बार ईकटोमी[39] कहीं जा रहा था। पर वह अपना घोड़ा ढूँढ रहा था क्योंकि वह उस पर परेड में चढ़ना चाहता था।

उसने मन में सोचा — "आज तो मैंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे हैं। मैं अपने घोड़े पर चढ़ कर तो बहुत ही शानदार लगूँगा।

मैं परेड में आगे आगे चलूँगा। सब लोग मुझे देखेंगे। वे अपने बच्चों से कहेंगे — "वह देखो, वह हमारी लड़ाई का सरदार जा रहा है जो बहादुरों से भी बहादुर है।"

ईकटोमी चलता जा रहा था चलता जा रहा था और अपने आप ही आप बोलता जा रहा था — "पर मेरा घोड़ा कहाँ गया? मुझे यकीन है कि जरूर ही उसे किसी सफेद आदमी[40] ने चुराया है। और अगर उसने नहीं चुराया तो फिर वह गया कहाँ?"

ईकटोमी ने इधर देखा उधर देखा पर उसको अपना घोड़ा कहीं दिखायी नहीं दिया।

---

[38] Iktomi and the Ducks – a story of Native American Indians, North America.
Adapted from the book "Iktomi and the Ducks: a plains Indian story", by Paul Goble. NY, Orchard Books. 30 pages unnumbered. A 1-story Children's Book with pictures.
[This is the story like "Skunk Ne Caayotee Ko Pachhada" story. Read it in the book entitled "Chipmunk, Mink Aur Skunk", by Sushma Gupta written in Hindi language.

[39] Iktomi is a spider fairy but can take any form.

[40] Translated for the word "White Man". As these stories are from Native Indians of America they call the immigrants from Europe as White Men. In the whole Africa all people from Europe, America, Russia, China etc are called "White Men",

इतने में ईकटोमी ने कुछ बतखों को एक तालाब में आनन्द करते देखा तो उसको ख्याल आया "भुनी हुई बतखें"। काश मैं इन बतखों को पकड़ सकता।

ईकटोमी ने कुछ सोचा और फिर वह कुछ झाड़ियों के पीछे छिप गया और वहॉ से एक मोटी सी डंडी तोड़ ली।

फिर उसने अपना कम्बल जमीन पर बिछाया और मुट्ठी भर भर कर घास तोड़ कर उसने उस कम्बल पर उसका एक बहुत बड़ा ढेर बना लिया। फिर उसने वह डंडी और घास दोनों उस कम्बल में लपेट ली।

वह पोटली उसने अपने कन्धे पर डाल ली और उस भारी सी पोटली को अपने कन्धे पर ले कर तेज़ी से उस तालाब के किनारे की तरफ चल दिया जहॉ वे बतखें तालाब में आनन्द कर रही थीं।

वह ऐसे चलने का बहाना कर रहा था जैसे कि वह बहुत जल्दी में हो। और यह दिखाने के लिये वह अपने माथे से पसीना भी पोंछता जा रहा था।

बतखें उसको देख रही थीं। उन्होंने उसको पुकारा — "ओ ईकटो। यह तुम्हारी पीठ पर क्या है?"

ईकटोमी चलता रहा जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं।

बतखें फिर बोलीं — "ईकटो, रुक जाओ। हमसे बात तो करो। तुम्हारे इस कम्बल में क्या है?"

ईकटोमी बोला — "मेरा यह कम्बल गीतों से भरा है। मैंने इन गीतों को अभी अभी धुन में बाँधा है। मैं इनको गाँव के पाउवाउ[41] में गाने वाला हूँ। हर आदमी इन गीतों पर नाचना चाहेगा।"

बतखों ने उससे जिद की — "तुम कुछ गीत हमको भी तो सुनाओ न ईकटो।"

कुछ और बतखें भी बोलीं — "हाँ हाँ कुछ गीत हमको भी तो सुनाओ न।"

वह बोला — "मुझे अफसोस है कि मैं रुक नहीं सकता। मुझे पाउवाउ में पहुँचने की बहुत जल्दी है।"

बतखों ने फिर उससे कुछ गीत सुनाने की प्रार्थना की — "सुनाओ न ईकटो।"

ईकटोमी बोला — "अच्छा ठीक है सुनाता हूँ, पर बस केवल एक गीत।"

यह सुन कर बतखें किनारे पर आ गयीं और हिलती हुई छोटे छोटे कदमों से किनारे पर चलने लगीं।

इकटोमी ने अपनी पोटली में अपना हाथ डाला और घास का एक पत्ता निकाला और बतखों से बोला — "मैं यह गाना गाऊँगा।

[41] A Pow-wow (also Powwow, Pow wow or Pau wau) is a gathering of some of North America's Native People. A similar gathering by California Native Peoples usually in the fall is called a Big Time. A modern Pow-wow is a specific type of event for Native American people to meet and dance, sing, socialize, and honor Native American/First Nations culture. Pow wows may be private or public. There is generally a dancing competition, often with significant prize money awarded. Pow-wows vary in length from a one-day event, to major Pow-wows called for a special occasion which can be up to one week long.

तुम लोग ऐसा करो कि एक गोले में इकट्ठी हो जाओ और फिर हम सब एक साथ गायेंगे और नाचेंगे।

मैं जो अभी गीत गाऊँगा वह एक बहुत ही खास गीत है। इसमें तुम सबको अपनी ऑखें बन्द करके रखनी है। अगर तुम उनको खोलोगी तो वे लाल हो जायेंगीं। मैं अपने ढोल की डंडी[42] से जमीन पर ताल देता रहूँगा।"

यह कह कर उसने अपनी पोटली से वह मोटी वाली डंडी निकाली और बोला — "अच्छा अब अपनी ऑखें बन्द करो और मेरे गीत पर नाचना शुरू करो —

ऑखें बन्द करो और मेरे साथ नाचो उनको बन्द रखना वरना वे लाल हो जायेंगीं
ऑखें बन्द करो और मेरे साथ नाचो

ईकटोमी अपनी उस डंडी से जमीन पर ताल देता जा रहा था। थम्प थम्प थम्प थम्प। ताल देते देते ईकटोमी चिल्लाया — "पैर पटक पटक कर नाचो, ज़ोर ज़ोर से नाचो।"।"

बतखें उसके साथ साथ नाचने लगीं, ऑखें बन्द करके, पैर पटक पटक कर, ज़ोर ज़ोर से, अपनी पूरी ताकत के साथ।

अचानक ईकटोमी ने जमीन पर ताल देने की बजाय बतखों के सिर पर डंडी मारना शुरू कर दिया। थम्प थम्प – एक बतख मर गयी। थम्प थम्प – फिर दूसरी बतख गयी।

[42] Translated for the word "Drumstick"

इस तरह से ईकटोमी ने कई बतखें मार दीं। एक बतख ने आधी ऑख खोल कर कोने से देखा कि ईकोटोमी क्या कर रहा है।

वह चिल्लायी — "ए बतखों भागो। ईकटोमी तो हमको मार रहा है।" यह सुन कर सारी बतखें वहॉ से उड़ कर भाग गयीं। ईकटोमी ने यह कितना भयानक काम किया, किया न?

क्या कभी तुमने देखा है कि कुछ बतखों की ऑखें लाल होती हैं। ये बतखें उन्हीं बतखों के बच्चे हैं जिन्होंने नाचते समय अपनी ऑखें खोलीं थीं।

फिर ईकटोमी ने आग जलायी। उसने उन मरी हुई बतखों को लोहे की सलाइयों में घुसाया और उनको आग के चारों तरफ भुनने के लिये रख दिया। एक बतख को उसने राख के अन्दर भुनने के लिये रख दिया।

जैसे जैसे उन बतखों में से उनके भुनने की खुशबू आती जा रही थी उसके मुॅह में पानी आता जा रहा था और उसका पेट बोलता जा रहा था "मुझे खाना चाहिये"।

हवा बहने लगी थी। पेड़ भी उस हवा से इधर से उधर हिलने लगे थे। इस हवा से दो पेड़ चरचराये और आपस में टकरा गये। उनके टकराने की आवाज ईकटोमी को बहुत बुरी लगी।

वह उनसे बोला — "भाई भाई को आपस में लड़ना नहीं चाहिये। तुम लोग अपनी लड़ाई बन्द करो वरना मुझे खुद आ कर तुम लोगों को अलग करना पड़ेगा।"

जब पेड़ों ने उसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया तो ईकटोमी उन दोनों में से एक पेड़ पर चढ़ गया और उन पेड़ों को अलग अलग करने लगा।

जब वह ऐसा कर रहा था तो हवा चलनी बन्द हो गयी और वह उन दोनों पेड़ों के बीच फॅस गया क्योंकि वे पेड़ हिलने बन्द हो गये थे।

वह चिल्लाया — "यह तुम क्या कर रहे हो पेड़ों? मुझे जाने दो। मैं ईकटोमी हूॅ मैं तुमको नीचे गिरा दूॅगा और काट दूॅगा।"

वह वहॉ से छूटने की कोशिश करने लगा। वह सीधा हुआ□ वह टेढ़ा हुआ। उसने पेड़ों को हाथ से मारा, पैर से मारा पर उन्होंने तो उसको बन्दी बना कर रखा हुआ था।

कायोटी दूर खड़ा यह सब देख रहा था। वह धीरे धीरे ईकटोमी की आग के पास आया। उसको अपनी आग के पास आया देख कर ईकटोमी वहीं से चिल्लाया — "भागो वहॉ से। मैं तुमको कुछ नहीं दूॅगा।"

पर कायोटी ने कुछ नहीं सुना और बतखें खाने में लग गया।

जब ईकटोमी ने देखा कि कायोटी ने उसकी सारी भुनी हुई बतखें खा ली हैं तो उसने कोयोटे से प्रार्थना की — "कम से कम मेरे लिये तुम वह राख में भुनी हुई बतख तो छोड़ दो, वह मेरी है।"

कोयोटे ने ईकटोमी की तरफ पीठ कर ली ताकि वह यह न देख सके कि वह क्या कर रहा था। उसने राख में से बतख

निकाली, उसको लाल कोयलों से भरा और फिर उसको राख में उसी जगह ही दबा दिया।

यह सब कर के कायोटी मुस्कुराया और अपनी बतखों का मॉस चाटते हुए धीरे धीरे अपने रास्ते चला गया।

कुछ देर में ही हवा फिर से बहने लगी और ईकटोमी उन पेड़ों के बीच में से छूट गया। पेड़ से उतर कर वह तुरन्त ही अपनी आग की तरफ भागा और अपनी राख में दबायी हुई बतख बाहर निकाली।

उसने भगवान को लाख लाख धन्यवाद दिया कि कायोटी ने कम से कम उसके लिये उसकी वाली, जो सबसे अच्छी बतख थी□ वह बतख छोड़ दी थी।

वह बहुत भूखा था सो उसने एक तुरन्त ही उसमें से एक बड़ा सा कौर काटा – और पता है उसे क्या मिला? एक बड़ा सा मुँह भर कर जलते कोयले।

वह तो ऊपर नीचे उछलने कूदने लगा और मुँह में से अंगारे और राख चारों तरफ थूकने लगा। फिर वह तालाब की तरफ दौड़ा और दौड़ कर पानी में कूद गया।

कुछ देर बाद जब उसके मुँह की गरमी कुछ शान्त हुई तो वह बोला — "ठहर जा ओ चोर कायोटी, मैं तुझे अभी देखता हूँ।"

कहता हुआ और शरीर से पानी टपकाता हुआ वह अपने घर की तरफ चला गया।

इन बतखों के चक्कर में ईकटोमी तो यह भूल ही गया कि वह अपना घोड़ा ढूँढने निकला था। तो फिर क्या हुआ उसके घोड़े का?

9 ईकटोमी और बड़ा चूहा[43]

एक बार सफेद झील के किनारे लगे एक बड़े से विलो के पेड़ के नीचे ईकटोमी नंगी जमीन पर बैठा था। वहीं पास में बुझी हुई राख पड़ी थी जो यह बता रही थी कि अभी अभी कुछ देर पहले वहॉ आग जली हुई थी।

ईकटोमी वहॉ पालथी मार कर बैठा हुआ था और उसकी टॉगों के बीच में रखा था एक सूप का बरतन। उस बरतन में थी स्वादिष्ट उबली हुई मछली।

उसको बहुत भूख लग रही थी इसलिये वह उस सूप के बरतन के ऊपर झुका हुआ था। उसने जल्दी से एक काले सींग की चम्मच सूप पीने के लिये सूप में डुबोयी।

ईकटोमी के खाने का कोई समय निश्चित नहीं था। जब भी उसको खाना मिलता वह बेचारा तभी खा लेता था। अक्सर जब वह भूखा होता तो वह बिना खाने के भी रह जाता।

झील और जंगली चावल के खेत के बीच वह ठीक से छिपा हुआ बैठा था और केवल अपने मछली के बरतन की तरफ देखते

[43] Iktomi and the Muskrat – a folktale from Native Indians of North America. Adapted from the Web Site : http://www.manataka.org/page146.html.

हुए वह यह सोच रहा था कि न जाने अब उसे अगला खाना कब मिलेगा।

तभी उस जंगली चावल के खेत में से उसे एक आवाज आयी — "हलो मेरे दोस्त।"

सुन कर ईकटोमी चौंक गया। उसका सूप उसके गले में अटक गया और उसकी सींग की चम्मच हवा में ही लटकी रह गयी। वह जहॉ बैठा था वहीं से उसने लम्बे लम्बे सरकंडों[44] के बीच में से झॉका पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया।

इतने में वही आवाज उसको फिर से सुनायी दी — "हलो मेरे दोस्त।"

इस बार वह आवाज उसको और पास से आती सुनायी दी, बिल्कुल उसके बराबर से।

ईकटोमी ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक बड़ा चूहा[45] उसके पीछे पानी में भीगा खड़ा था। वह बड़ा चूहा अभी अभी पानी में से निकल कर आ रहा था।

ईकटोमी बोला — "अरे यह तो मेरा दोस्त है बड़ा चूहा जिसने तो मुझे बस डरा ही दिया। मुझे लगा कि इस जंगली चावल के खेत

[44] Translated for the word "Reeds". See its picture above.

[45] Translated for the word "Muskrat". Muskrat is a small size semi-aquatic rodent native to North America – see its picture above.

में से कोई आत्मा या भूत मुझसे बातें कर रहा था। तुम कैसे हो मेरे दोस्त?"

वह बड़ा चूहा वहॉ मुस्कुराता हुआ खड़ा रहा। अगर उसका दोस्त ईकटोमी उस समय उससे यह कहता — "आओ मेरे दोस्त, मेरे पास बैठो और मेरे साथ खाना खा लो।" तो वह तुरन्त ही यह कहता "हॉ हॉ क्यों नहीं।"

यह वहॉ के मैदानों में रहने वालों का रिवाज था कि खाने के समय अगर कोई आता था तो उसको खाना जरूर खिलाया जाता था पर ईकटोमी तो चुप बैठा था। वह तो कुछ बोला ही नहीं।

उस बड़े चूहे को इस तरह आता देख कर ईकटोमी ने नाच के एक पुराने गाने की धुन गुनगुनानी शुरू की और अपने मछली के बरतन पर भैंस के सींग से बनी चम्मच से ताल देनी शुरू की।

उस बड़े चूहे को वहॉ इस तरह खड़े खड़े बहुत ही अजीब लग रहा था क्योंकि ईकटोमी तो उसकी सामान्य मेहमानदारी भी नहीं कर रहा था। उसको लगा कि उसको तो पानी में ही रहना चाहिये था।

काफी देर के बाद ईकटोमी ने अपनी चम्मच से मछली के बरतन पर अपनी ताल देना बन्द किया और बड़े चूहे के चेहरे की तरफ देख कर बोला — "दोस्त चलो एक दौड़ दौड़ते हैं और देखते है कि मछली का यह बरतन कौन जीतता है।

अगर मैं जीतता हूँ तो मुझे इसको तुमसे बॉटने की कोई जरूरत नहीं है। पर अगर तुम जीतते हो तो इसमें से आधा हिस्सा तुम्हारा।"

और यह कहने के तुरन्त बाद ही वह उठ खड़ा हुआ और उसने अपने पेट की पेटी कस ली।

भूखा बड़ा चूहा बोला — "ईकटो, मैं तुम्हारे साथ नहीं दौड़ सकता क्योंकि मैं तेज़ भागने वालों में से नहीं हूँ और तुम तो हिरन की तरह से भागते हो। इस तरह तो मैं यह दौड़ कभी जीत ही नहीं सकता। हम यह दौड़ नहीं दौड़ेंगे।"

यह सुन कर ईकटोमी अपनी ठोड़ी पर हाथ रख कर चुपचाप बैठा सोचता रहा कि वह अब क्या करे। उसकी ऑखें हवा में किसी चीज़ पर जमी रहीं।

उधर वह बड़ा चूहा भी अपना सिर बिना हिलाये अपनी ऑखों के कोने से देखता रहा। उसको लग रहा था कि ईकटोमी अब कोई दूसरा जाल बिछाने के बारे में सोच रहा था। और यह सच था। वह वाकई यही सोच रहा था।

ईकटोमी ने कुछ सोचा और अचानक उस बिन बुलाये मेहमान की तरफ देख कर बोला — "हॉ हॉ, यह तो तुम ठीक कहते हो। तुम मेरे साथ नहीं भाग सकते।

तो ऐसा करते हैं कि मैं एक बड़ा सा पत्थर अपनी कमर पर बॉध लेता हूँ इससे मेरे भागने की रफ्तार कम हो जायेगी। और तब हम दोनों एक सी रफ्तार से भाग पायेंगे।"

ऐसा कह कर उसने अपना मजबूत हाथ उस बड़े चूहे के कन्धे पर रखा और दोनों झील की तरफ चल दिये। जब वे वहॉ पहुँचे तो ईकटोमी ने वहॉ एक भारी सा पत्थर ढूँढना शुरू किया।

उसको एक ऐसा पत्थर वहॉ पानी में आधा गड़ा हुआ मिल गया जिसको वह अपनी पीठ पर बॉध कर भाग सकता था। उसने वह पत्थर निकाल कर पहले सूखी जमीन पर रखा और फिर उसको अपने कम्बल में लपेट लिया।

फिर वह बड़े चूहे से बोला — "अब तुम इस झील के बॉयी तरफ दौड़ो और मैं इस झील के दॉयी तरफ दौड़ता हूँ। जो कोई भी उस बरतन में रखी उबली हुई मछली के पास पहले पहुँच जाये।"

बड़े चूहे ने उस भारी पत्थर को उठाने में ईकटोमी की सहायता की और उसको उसकी पीठ पर रख दिया। उसके बाद वे लोग अलग हो गये। दोनों ने झील के किनारे जाता हुआ सरकंडे के पेड़ों से घिरा हुआ तंग रास्ता लिया।

ईकटोमी को वह बोझा बहुत भारी लग रहा था। दौड़ते दौड़ते उसके माथे पर पसीना आ गया और वह हॉफने लगा।

उसने झील के उस पार देखा कि बड़ा चूहा कितनी दूर तक पहुँचा पर उसका तो उधर कहीं नामो निशान ही नहीं था। उसने

सोचा "वह तो जंगली चावलों के पौधों के नीचे धीरे धीरे दौड़ रहा होगा।"

सो फिर उसने चावल के पौधों को भी ध्यान से देखा कि शायद वहॉ उसको कुछ दिखायी दे जाये पर वहॉ भी उसको चावल के पौधों का एक पत्ता भी हिलता नजर नहीं आया।

उसने फिर सोचा "क्या वह इतनी तेज़ भाग गया कि उसके चले जाने के बाद भी चावल की ये लम्बी लम्बी घासें शान्त हो गयीं?"

बस यह सोचते ही ईकटोमी का माथा ठनका और उसने अपनी पीठ से पत्थर का वह बोझ उतार फेंका और बोला "बस काफी हो गया।" कहता हुआ वहॉ से अपने दोनों हाथों से अपनी छाती पीटता हुआ अपनी मछलियों के बरतन की तरफ भाग लिया।

भागते समय घास और सरकंडे के पेड़ उसके पैरों के नीचे आ कर कुचले जा रहे थे। जब तक वे अपना सिर उठाते तब तक तो ईकटोमी वहॉ से बहुत दूर चला गया होता था। बहुत जल्दी ही वह अपनी ठंडी आग के पास पहुॅच गया।

पर ईकटोमी तो वहॉ जा कर ऐसे रुक गया जैसे कोई किसी पहाड़ की चढ़ाई पर रुक जाता है। वहॉ तो सारी जगह खाली पड़ी थी। वहॉ तो उसको अपनी उबली हुई मछली का बरतन भी कहीं दिखायी नहीं दिया और वह बड़ा चूहा भी उसको कहीं दिखायी नहीं दिया।

यह देख कर उसने एक लम्बी साँस ली और बोला — "काश, मैंने एक सच्चे डकोटा[46] की तरह उसको अपना खाना दे दिया होता तो मैंने आज अपना सारा खाना न खोया होता।

मुझे यह पहले से ही पता क्यों नहीं चला कि वह बड़ा चूहा तो पानी के अन्दर से भाग जायेगा। जितनी तेज़ जमीन पर मैं भाग सकता हूँ वह तो उससे कहीं ज़्यादा तेज़ पानी में तैर सकता है। और यही उसने किया भी। और यही उसके लिये ठीक भी था।

मुझे यकीन है कि जब मैं बोझा उठा कर भाग रहा था तब वह मुझ पर जरूर ही हँस रहा होगा और उसी समय वह तीर की तरह तैर कर चला गया होगा।"

इस तरह रोते हुए ईकटोमी नदी के किनारे पानी पीने के लिये चल दिया। वहाँ जा कर उसने अपने दोनों हाथ पानी पीने के लिये पानी में डाले और पानी में दूर तक झाँका और चिल्लाया — "अरे मेरे दोस्त तुम मेरे मछली के बरतन को लिये हुए यहाँ छिपे बैठे हो। मुझे बहुत भूख लगी है। कम से कम चबाने के लिये मुझे एक हड्डी तो दे दो।"

बड़ा चूहा ज़ोर से हँस पड़ा और बोला — "हा हा हा।"

पर यह हँसने की आवाज पानी में से नहीं आ रही थी बल्कि ईकटोमी के सिर के ऊपर विलो के पेड़ के ऊपर से आ रही थी।

[46] North Dakota and South Dakota are two states of the USA one over the other located in the North-Western region. North Dakota is bordered by the Canadian Provinces, and South Dakota is in its South.

ईकटोमी ने उस बड़े से विलो के पेड़ के ऊपर की तरफ देखा तो बड़े चूहे को उस पेड़ के ऊपर बैठा पाया।

घुटनों के बल बैठे ही बैठे मुँह खोल कर उसने फिर उस बड़े चूहे से एक हड्डी देने की प्रार्थना की तो उस बड़े चूहे ने एक बहुत नुकीली हड्डी ईकटोमी की तरफ इस तरह फेंकी जो सीधे उसके खुले गले में जा कर पड़ी।

ईकटोमी तो उससे मर ही जाता अगर वह उसको जल्दी ही अपने गले से न निकाल देता।

बड़ा चूहा पेड़ पर बैठा बहुत ज़ोर ज़ोर से हँस रहा था। हँसते हँसते ही वह बोला — "आगे से जब भी तुम्हारे पास कोई तुम्हारा दोस्त आये तो उसको बोलो "आओ यहाँ मेरे पास बैठो। मेरे साथ खाना खाओ।"

10 ईकटोमी और हिरन का बच्चा[47]

एक बार ईकटोमी घने जंगलों में घूम रहा था कि उसने एक पेड़ के ऊपर एक ऐसी चिड़िया बैठी देखी जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी।

उसके पीछे वाले लम्बे पंख इन्द्रधनुषी रंग के थे। धूप में चमकती हुई वह चिड़िया उसको बहुत सुन्दर लग रही थी। सो ईकटोमी की ऑख उसी के ऊपर जा कर टिक गयी। वह मोर था।

वह पेड़ के नीचे खड़ा खड़ा उस मोर को बहुत देर तक देखता रहा। बहुत देर तक देखने के बाद उसने एक गहरी सॉस ली और बोला — "काश मेरे भी ऐसे पंख होते। काश मैं ऐसा न होता जैसा मैं अब हूॅ।

अगर मेरे भी इतने सुन्दर पंख होते तो मैं कितना खुश रहता। मैं भी किसी पेड़ पर ऊॅचाई पर बैठा होता और गरमी की धूप में तुम्हारी तरह चमक रहा होता, ओ चिड़िया।"

[47] Iktomi and the Fawn – a folktale from Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.manataka.org/page146.html

यह कहते हुए उसने अचानक ऊपर की तरफ देखते हुए अपनी उँगली मोर की तरफ कर दी जो खुद भी उस अजनबी को अपना सिर घुमा घुमा कर देखे जा रहा था।

"मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे भी ऐसे ही हरे नीले पंख वाली चिड़िया बना दो जैसे तुम हो।" असल में वह अपनी मोती लगी हिरन की खाल के कपड़ों से थक चुका था।

यह सुन कर मोर बोला — "मेरे पास एक जादुई ताकत है। अगर तुम मेरी एक शर्त मानो तो मेरे एक बार छूने से तुम दुनियाँ के सबसे सुन्दर मोर में बदल जाओगे।"

सुनते ही ईकटोमी ने अपने होठों को आश्चर्य में अपनी हथेली से थपका और ऊपर नीचे कूदते हुए चिल्लाया — "मैं तुम्हारी दस शर्त मान सकता हूँ अगर तुम मुझको इतने लम्बे चमकीले रंगों के पंखों वाली चिड़िया में बदल दो तो।

देखो न, देखने में मैं कितना बदसूरत दिखता हूँ। मैं तो अपने आपसे तंग आ गया हूँ। मेहरबानी करके मुझे बदल दो।"

यह सुन कर मोर ने अपने दोनों पंख फैलाये और बहुत ही धीरे से उनको हिलाता हुआ नीचे की तरफ उतर आया।

नीचे आ कर वह ईकटोमी के बिल्कुल पास आ कर बैठ गया और उसके कान में फुसफुसाया — "क्या तुम अभी भी उस शर्त को निभाने के लिये तैयार हो जो मैं अभी तुम्हें बताने जा रहा हूँ? हालाँकि वह थोड़ी मुश्किल है।"

ईकटोमी खुशी से नाचता हुआ बोला — "मैंने कहा न कि अगर दस शर्तें हों तब भी।"

मोर बोला — "तब मैं बोलता हूँ कि तुम दुनियॉ की सबसे सुन्दर चिड़िया बन जाओ पर फिर आज से तुम चालाकी खेलने वाले ईकटोमी नहीं रहोगे।"

यह कह कर मोर ने ईकटोमी को अपने पंख की नोक से छुआ। मोर के छूते ही ईकटोमी तो गायब हो गया और अब उस पेड़ के नीचे दो सुन्दर मोर खड़े थे।

उन दोनों मोरों में से एक मोर तो अपना सिर उठा कर शान से खड़ा था और दूसरा मोर धीरे से ऊपर उड़ गया। जमीन पर खड़ा मोर अपने ही चमकदार पंखों की चमक से जगमगा रहा था।

कुछ देर तक तो वह वहॉ धूप में अपने इस रूप में सन्तुष्ट सा चुपचाप सा बैठा रहा। फिर कुछ देर बाद जब वह होश में आया तो उस नकली मोर ने अपने चमकीले रंगों के पंखों से चक्कर सा खाते हुए अपने पंख फैलाये और उसी शाख पर जा कर बैठ गया जिस पर वह असली मोर बैठा था।

वहॉ बैठ कर वह बोला — "ओह उड़ना कितना कठिन काम है। ये चमकीले रंग वाले पंख तो बहुत सुन्दर हैं पर अगर ये थोड़े हल्के होते तो कितना अच्छा होता।"

तभी असली मोर बोला — "सो शर्त यह है कि तुम दूसरी चिड़ियों की तरह उड़ने की कभी कोशिश नहीं करोगे। जिस दिन

भी तुमने उनकी तरह उड़ने की कोशिश की तुम अपने पहले रूप में आ जाओगे।"

ईकटोमी बोला — "ओह, यह तो बड़ी बुरी बात है कि इन चमकीले पंखों से आसमान में नहीं उड़ा जा सकता।"

क्योंकि वह तो उड़ने के लिये पहले से ही बहुत बेचैन था। वह तो आसमान में उड़ना चाहता था। वह तो पेड़ों के ऊपर से उड़ कर सूरज के पास तक जाना चाहता था और मोर ने यह शर्त रख दी थी कि वह आसमान में नहीं उड़ सकता था। तब फिर इन पंखों का क्या फायदा।

इतने में उसको कुछ चिड़ियें आसमान में उड़ती दिखायी दे गयीं। वह अपने पंख फड़फड़ाते हुए बोला — "मुझे अपने इन पंखों से उतना ऊँचा उड़ने की कम से कम कोशिश तो करनी ही चाहिये।" वह अपनी उस लम्बी सी पंखों की पूँछ से थक गया था।

असली मोर बोला — "नहीं नहीं। ऐसा कभी मत करना।"

पर इतने में ही उन चिड़ियों का झुंड उसके पास से उड़ गया।

अपनी उड़ने की इच्छा को न रोक पाने की वजह से ईकटोमी चिल्लाया — "ओ चिड़ियों, ज़रा रुक जाओ मैं भी तुम्हारे साथ आना चाहता हूँ।"

और इसके साथ ही उसने अपने फेंफड़ों मे हवा भरी और वह ऊपर की तरफ उड़ा। पर यह क्या? ऊपर जाने की बजाय वह तो

नीचे जमीन पर आ गिरा। और अब वह सुन्दर मोर नहीं था बल्कि हिरन की खाल में लिपटा ईकटोमी था।

ईकटोमी ने दुखी आवाज में फिर से उस असली मोर से प्रार्थना की — "ओह, मैं तो फिर से ईकटोमी बन गया। मुझे फिर से वही सुन्दर चिड़िया बना दो। मुझे एक बार फिर से मौका दो ओ सुन्दर चिड़िया।"

पर सब बेकार। असली मोर ने उसकी कोई बात नहीं सुनी और वह ईकटोमी ही बना रह गया।

चिड़ियें वहॉ से गाती चली गयी — "ओह, यह ईकटोमी हमारे साथ उड़ना चाहता है पर यह तो आया ही नहीं। अब हम इसका और इन्तजार नहीं कर सकते हम चलते हैं।"

कुछ बेकार के इरादों को बड़बड़ाते हुए ईकटोमी वहॉ से आगे चल दिया। अभी वह कुछ दूर ही गया होगा कि उसको कुछ लम्बे तीर दिखायी दिये। वे एक एक करके मैदान में एक लम्बी लाइन की तरफ जा रहे थे। कुछ आसमान की तरफ भी जा रहे थे पर वे जल्दी ही ऑखों से ओझल भी हो जाते थे।

केवल एक तीर रह गया था। वह भी उड़ने की तैयारी में था कि ईकटोमी उसके पास दौड़ा गया और रो कर उससे बोला — "मैं भी एक तीर बनना चाहता हूॅ। तुम मुझे एक तीर बना दो न।

मैं भी ऊपर वाले उस नीले आसमान को भेदना चाहता हूँ। मैं सूरज को उसके बीच में से भेदना चाहता हूँ। तुम मुझे एक तीर बना दो न।"

तीर ने पूछा — "क्या तुम मेरी एक शर्त मान सकते हो? हालाँकि वह शर्त थोड़ी मुश्किल है पर अगर मान लोगे तो मैं तुमको तीर बना सकता हूँ।"

ईकटोमी खुशी से चिल्लाता हुआ बोला — "हाँ हाँ। मैं तुम्हारी सब शर्तें मानने के लिये तैयार हूँ बस तुम मुझे तीर बना दो।"

इस पर उस तीर ने ईकटोमी को अपनी पत्थर की नोक से बहुत ही धीरे से छुआ तो ईकटोमी तो वहाँ से गायब हो गया और अब वहाँ दो तीर बराबर बराबर उड़ने के लिये तैयार खड़े थे।

ईकटोमी को तीर में बदलने के बाद असली तीर धीरे से बोला — "पहली शर्त तो यह है कि तुमको हमेशा सीधी लाइन में उड़ना है। और दूसरे न तो किसी मोड़ पर मुड़ना है और न ही किसी हिरन के छोटे से बच्चे की तरह कूदना है।"

यह कहने के तुरन्त बाद ही वह असली तीर उस नकली तीर को सीधी लाइन में उड़ना सिखाने के लिये तैयार हो गया — "देखो, उस ऊपर वाले नीले आसमान को इस तरीके से भेदते हैं।"

कह कर वह तीर सीधा ऊपर चला गया।

उसके जाने के तुरन्त बाद ही हिरनों का एक झुंड घूमता हुआ उधर आ निकला। उनके पीछे उनके बच्चे खेलते हुए चले आ रहे थे। वे लोग बिल्ली के बच्चों की तरह लड़ झगड़ रहे थे और अपने चारों पैरों पर गेंद की तरह से उछल रहे थे।

ईकटोमी ने जब उनको देखा तो उसने देखा कि वे तो जमीन पर ही कितना खुश थे। तो उसने सोचा कि वह भी तो इसी तरह से जमीन पर खुश रह सकता था।

सो उसने तुरन्त ही आसमान की तरफ देखा और अपने दिल में सोचा "वह जादूगर तो चला गया। अब जब तक वह वापस आता है तब तक मैं इन हिरन के बच्चों के साथ खेल लेता हूँ।"

सो वह उन हिरन के बच्चों की तरफ बढ़ा। एक तीर को अपनी तरफ आया देख कर हिरन के बच्चे डर गये।

उनको डरा हुआ देख कर ईकटोमी बोला — "ओ हिरन के बच्चों, डरो नहीं। मैं तो तुम्हारे साथ उछलना कूदना चाहता हूँ। मैं भी तुम्हारी तरह से तुम्हारे साथ खुश होना चाहता हूँ। मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

यह सुन कर हिरन के बच्चों की टाँगें सीधी हो गयीं और वे खड़े हो गये। वे एक बोलते हुए तीर को देख कर आश्चर्य में पड़ गये और उसको अपनी बड़ी बड़ी कत्थई आँखों से घूरने लगे।

उनको अपनी तरफ घूरते देख कर ईकटोमी नाचता हुआ बोला — "देखो मैं भी तुम्हारी तरह से नाच सकता हूँ।" कह कर उसने हिरन की तरह से एक कूद मारी।

यह देख कर अचानक ही हिरन के बच्चों ने अपनी नाक सिकोड़ी। क्योंकि वहाँ तो अब एक अजीब बोलने वाले तीर की बजाय अपनी हिरन की खाल पहने ईकटोमी खड़ा था।

यह देख कर ईकटोमी अपने आपको नोचने लगा और अपनी हिरन की खाल से टुकड़े निकाल निकाल कर चिल्ला पड़ा — "ओह मैं तो फिर से ईकटोमी बन गया। यह क्या हो गया।"

"ही ही ही। मैं तो उड़ना चाहता था पर अब मैं क्या करूँ।"

असली तीर तब तक नीचे वापस आ गया था। वह ईकटोमी के बिल्कुल पास आ कर खड़ा हो गया।

उसने आसमान से ही उन हिरन के बच्चों को घास में खेलते देख लिया था और उसने ईकटोमी को भी उनके साथ कूद लगाते देख लिया था।

सो जैसे ही ईकटोमी ने कूद लगायी असली तीर के छूने का जादू टूट गया और वह फिर से ईकटोमी बन गया।

ईकटोमी ने एक बार फिर उससे प्रार्थना की कि वह उसको एक बार फिर से तीर में बदल दे पर ऐसा न हो सका।

तीर बोला — "नहीं बस, अब दूसरी बार नहीं।" और वह सीधा उड़ कर आसमान में उसी तरफ चला गया जिधर उसके साथी गये थे।

अब तक वे हिरन के बच्चे उसके पास आ गये थे और उसके शरीर में अपनी नाक गड़ा गड़ा कर यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि वह अजनबी कौन था।

अपनी इस हालत पर ईकटोमी बहुत दुखी था। वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। पर तुरन्त ही उसके मन में एक और इच्छा जाग उठी और इस इच्छा के जागते ही उसके ऑसू सूख गये।

वह हिरन के सबसे बड़े बच्चे के पास पहुँचा। उसने उसके चेहरे पर बड़े बड़े कत्थई निशान देखे तो वह उससे बोला — "ओ हिरन के बच्चे, तुम्हारे चेहरे पर ये कितने सुन्दर कत्थई निशान हैं। क्या तुम मुझे बता सकते हो कि तुम्हारे चेहरे पर ये इतने सुन्दर निशान कैसे बने?"

वह हिरन का बच्चा बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। इसमें क्या बात है। मैं बताता हूँ तुमको। जब मैं बहुत छोटा था तभी मेरी मॉ ने लाल गरम आग से मेरे चेहरे पर ये निशान बना दिये थे।

उसने जमीन में एक गड्ढा खोदा। उसमें उसने थोड़ी सी मुलायम घास और छोटी छोटी डंडियॉ बिछायी। फिर उसने मुझको उस गड्ढे में रख दिया। उसके बाद उसने मुझे मीठी खुशबू वाली

सूखी घास से ढक दिया और उसके ऊपर सीडर की लकड़ी रख दी।

फिर वह पड़ोसी के घर से एक लाल अंगारा ले कर आयी जो उसने मेरे सिर पर रख दिया। इस तरह से मेरे चेहरे पर ये कत्थई निशान बनाये गये।"

ईकटोमी जो हमेशा दूसरों की तरह होना चाहता था बड़ी उत्सुकता से बोला — "क्या तुम मेरे साथ भी ऐसा ही कर सकते हो? क्या तुम उस तरीके से मेरे चेहरे पर भी ऐसे ही निशान बना सकते हो?"

हिरन का बच्चा बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं गड्ढा खोद सकता हूँ। उसमें सूखी घास और डंडियॉ भर सकता हूँ। फिर अगर तुम उस गड्ढे में कूद सकते हो तो मैं तुमको मीठी खुशबू वाली सूखी घास और सीडर की लकड़ी से भी ढक सकता हूँ।"

ईकटो उसको बीच में काटता हुआ बोला — "क्या तुम यकीन के साथ कह सकते हो कि तुम मुझको काफी सारी सूखी घास और डंडियों से ढक दोगे?

और फिर क्या तुम यह भी यकीन के साथ कह सकते हो कि फिर मेरे वे निशान उतने ही कत्थई होंगे जितने तुम्हारे हैं?"

"हॉ हॉ, मैं वहॉ काफी सारी घास और डंडियॉ रखने के बाद भी घास और डंडियॉ रखता रहूँगा, अपनी मॉ से भी ज़्यादा। तुम बिल्कुल चिन्ता न करो।"

ईकटोमी खुशी से चिल्ला कर बोला — "तब हमको जल्दी से एक गड्ढा खोदना चाहिये और घास और डंडियॉ इकट्ठा करनी चाहिये।"

इस तरह से ईकटोमी ने अपनी कब्र अपने आप ही खोदने में उस हिरन के बच्चे की सहायता की।

गड्ढा खोदा गया। उसमें घास बिछायी गयी। उन कत्थई निशानों के बारे में कुछ बड़बड़ाने के बाद ईकटोमी उस गड्ढे में उतर गया।

वह उसमें लम्बा लम्बा लेट गया। हिरन के बच्चे ने उसको मीठी खुशबू वाली घास और सीडर की लकड़ी से ढक दिया। दूर से एक आवाज आयी "ओ कत्थई निशान हमेशा के लिये आ जाओ।"

फिर हिरन ने उस गड्ढे में एक अंगारा डाल दिया और सारे हिरन के बच्चे वहॉ से अपनी अपनी मॉओं के पीछे भाग गये। काफी दूर जाने पर उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो उस गड्ढे में से बहुत सा काला धुँआ उठ रहा था और वह नीले आसमान की तरफ जा कर गायब हो जाता था।

यह देख कर एक हिरन के बच्चे ने दूसरे से पूछा — "क्या यह ईकटोमी की आत्मा है?"

उसके साथी ने जवाब दिया — "नहीं। मेरे खयाल से तो उसको जलने से पहले ही बाहर कूद जाना चाहिये।"

बच्चो तुम क्या सोचते हो? क्या ईकटोमी अपनी जान बचाने के लिये उस गड्ढे में से वाकई बाहर कूद गया होगा या फिर...

11 ईकटोमी का कम्बल[48]

एक बार ईकटोमी अपने टैपी[49] में अकेला बैठा था। सूरज तो काफी गरम था पर जमीन के पश्चिमी किनारे से जो हवा आ रही थी उससे वहाँ कुछ ठंडा हो रहा था।

वह बहुत नाराज था। अपना शरीर आगे पीछे हिलाते हुए वह कह रहा था — "वे बड़े बड़े भूरे भेड़िये। वे बहुत खराब हैं उन्होंने मेरी कितनी बढ़िया मोटी मोटी बतखें खा लीं।"

उसको उन खराब भूखे भेड़ियों की याद आये ही जा रही थी जिन्होंने उसकी बतखें खा ली थीं। वह किसी तरह भी उनको भूल नहीं पा रहा था। आखिर उसने अपने शरीर को आगे पीछे हिलाना बन्द कर दिया और बिल्कुल सीधा हो कर बैठ गया जैसे कोई पत्थर की मूर्ति हो।

"ठीक है मैं इन्यान[50] के पास जाता हूँ और उन्हीं से अपने खाने के लिये प्रार्थना करता हूँ।"

बस यह विचार आते ही उसने अपने कन्धों पर अपना कम्बल डाला और अपनी टैपी से बाहर निकल गया। पास के पहाड़ के

---

[48] Iktomi's Blanket – a folktale from Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.manataka.org/page146.html

[49] Tepee is the traditional house of Native Americans living in North America – see its picture above.

[50] Inyan is the rock which is Iktomi's great grandfather. It is the Primordial stone spirit of Sioux Tribe mythology.

पास ही एक बड़ी सी चट्टान पड़ी थी वह जा कर उस चट्टान पर चढ़ गया।

घुटनों के बल बैठ कर भागते हुए वह इन्यान के खुले हाथों में जा कर गिर गया और रो कर बोला — "बाबा मुझ पर दया करो। मैं बहुत भूखा हूँ मुझे खाना दो। बाबा खाने के लिये मुझे कुछ मॉस दो। मैं बहुत ही भूखा हूँ।"

जितनी देर में उसने यह सब कहा उतनी देर तक वह उस पत्थर के देवता का चेहरा सहलाता रहा।

वह देवता जो सब कुछ बनाता है घास भी और पेड़ भी, वह सबकी सुनता है चाहे वे उसकी किसी भी तरह से प्रार्थना क्यों न करें। इन्यान की पूजा वहॉ सबसे ज़्यादा की जाती थी क्योंकि वह तो सबके पर–बाबा[51] थे और उस पहाड़ के पास बरसों से बैठे थे।

उन्होंने ही तो वहॉ के घास के मैदानों को हजारों से ज़्यादा बार बरफ से और फिर चमकीली घास से ढका देखा था। पर उनके ऊपर इस सबका कोई असर नहीं था।

वह तो बस हमेशा से पड़ी उस चट्टान पर आराम करते रहते थे और इन्डियन लड़ने वालों की प्रार्थनाऐं सुनते रहते थे। जादू के तीर को पाने से पहले से ही वह वहॉ बैठे हुए हैं।

[51] Great grand-father

जब ईकटोमी वहाँ रो रहा था और इन्यान की प्रार्थना कर रहा था पश्चिमी आसमान कुछ लाल हो रहा था जैसे कोई चेहरा चमक रहा हो।

सूरज डूबने से उस भूरी चट्टान पर और उसके बराबर एक आदमी पर बहुत ही सुन्दर रोशनी पड़ रही थी। यह तो उस बड़े देवता[52] बाबा इन्यान की मुस्कुराहट थी उस भटके हुए बच्चे पर।

ईकटोमी को पता चल गया कि उसकी प्रार्थना सुन ली गयी थी सो वह बोला — "बाबा लो, अब यह मेरी भेंट स्वीकार करो। मेरे पास बस अब यही कुछ बचा है।" कह कर उसने अपना फटा कम्बल इन्यान के कन्धों पर ओढ़ा दिया।

उसके बाद ईकटोमी सूरज के छिपने वाले आसमान की मुस्कुराहट के साथ एक पगडंडी पर घाटी की तरफ चल दिया। यह पगडंडी घनी झाड़ियों में से हो कर जाती थी। वह बहुत दूर नहीं गया था कि उसको एक घायल हिरन पड़ा हुआ मिल गया।

उसको देख कर ईकटोमी बहुत खुश हुआ। वह खुशी से हाथ उठा कर बोला — "आहा, तो यह है लाल पश्चिमी आसमान का जवाब।"

उसने अपनी कमर की पेटी से एक लम्बे फल वाला चाकू निकाला और उससे हिरन के सबसे अच्छे मॉस के कुछ टुकड़े काट

[52] The Creator

लिये। फिर उसने विलो के पेड़ की कुछ डंडियों की नोकें बनायीं और एक लकड़ी का ढेर लगा कर उसके चारों तरफ गाड़ दीं।

लकड़ी के ढेर में वह आग लगाने ही वाला था ताकि वह उस आग में उस हिरन का मॉस भून सके। तो आग जलाने के लिये जब वह लकड़ी की दो डंडियों को रगड़ रहा था तभी सूरज पश्चिम में आसमान से नीचे धरती के किनारे से भी नीचे चला गया।

शाम हो गयी थी। ईकटोमी को अपने नंगे गले और कन्धों पर ठंडी हवा महसूस होने लगी थी। वह ठंड से कॉप गया "उफ़"। उसने अपना चाकू घास से रगड़ कर साफ किया और उसको मोतियों से बने एक थैले में रख लिया जो उसकी कमर से लटका हुआ था।

ईकटोमी सीधा खड़ा हो कर चारों तरफ देखने लगा। ठंडा था सो वह फिर कॉप गया। लकड़ी के ढेर और उसके चारों तरफ लगी विलो की डंडियों के ऊपर झुकता हुआ वह बोला — "उफ़ यहॉ तो बहुत ठंडा है। काश मेरे पास मेरा कम्बल होता।"

अचानक वह रुक गया और उसके हाथ नीचे हो गये। उसने सोचा बूढ़े परबाबा तो उस तरह से ठंड महसूस नहीं करते जैसे मैं करता हूँ। वह उस तरीके से तो शायद कम्बल की जरूरत भी महसूस नहीं करते होंगे जैसे मैं करता हूँ।

काश मैंने उनको अपना कम्बल न दिया होता। मुझे लगता है कि मैं वहॉ वापस जाऊँ और वहॉ से अपना कम्बल ले कर आऊँ।

ईकटोमी को गरम धूप में तो उस कम्बल की जरूरत नहीं थी सो उसके लिये उस चीज़ को दे देना बहुत आसान था जिसको उसकी जरूरत नहीं थी पर इस ठंडी रात की ठंडी हवा में तो वह सिकुड़ा जा रहा था। उसको इस समय तो अपने उस कम्बल की बहुत जरूरत थी।

बस वह वहॉ से उस चट्टान की तरफ भाग लिया। रास्ते में ठंड की वजह से उसके दॉत बज रहे थे। भागते भागते वह अपने गुप्त निशान इन्यान के पास आया। वहॉ आ कर उसने अपने फटे कम्बल का एक कोना पकड़ कर उसे एक झटके से खींच लिया।

"ओ बूढ़े बाबा मेरा कम्बल वापस दो। तुम्हें इस कम्बल की जरूरत नहीं है, मुझे है।"

हालॉकि यह सब बहुत गलत था जो ईकटोमी ने अपने परबाबा के साथ किया पर ईकटोमी ने यह किया क्योंकि उसको अक्ल कम थी। उसने अपना वह कम्बल वहॉ से उठाया, अपने कन्धों पर लपेटा और जल्दी जल्दी पहाड़ी से नीचे की तरफ चल दिया।

जल्दी ही वह वहॉ आ गया जहॉ वह अपना हिरन भूनने के लिये छोड़ कर आया था। कमान की शक्ल का चॉद दक्षिण पश्चिमी आसमान में उग आया था।

उसकी धुँधली रोशनी में ईकटोमी उन झाड़ियों के बीच एक भूत की तरह खड़ा था। उसकी लकड़ियों का ढेर अब तक नहीं जला था। उसकी नुकीली लकड़ियॉ भी ऐसी ही खड़ी थीं।

पर वह हिरन कहॉ था जो वह वहॉ छोड़ कर गया था। जिसके मॉस की गर्मी उसने कुछ देर पहले ही अपने हाथों में महसूस की थी।

वह तो जा चुका था। उसकी केवल सूखी पसलियॉ ही बहुत बड़ी बड़ी उॅगलियों की तरह जमीन पर पड़ी हुई थीं जैसे वे किसी कब्र में से निकली हों।

यह देख कर तो ईकटोमी परेशान हो गया। आखिर उसने उन सफेद सूखी हड्डियों में से एक हड्डी उठायी और उसको हिला कर बजाया। हड्डियॉ जो अभी भी हिरन के शरीर में लगी थीं उसके हिलाने से वे झुनझुने की तरह बज उठीं।

ईकटोमी ने उनको तो वहीं छोड़ दिया और आश्चर्य से पीछे की तरफ कूद गया। हालॉकि वह अपना कम्बल ओढ़े था फिर भी ठंड की वजह से उसके दॉत बहुत ज़ोर ज़ोर से बज रहे थे। वह अपने मॉस के गायब हो जाने पर बहुत दुखी था।

वह चिल्ला कर बोला "ओह यह मैंने क्या किया। मैंने अपना कम्बल लाने के लिये जाने से पहले वह मॉस खा क्यों नहीं लिया?"

बच्चो, उसकी बेवकूफी तो देखो। बजाय इसके कि वह बाद में दुखी हो रहा था और अपने खाने के लिये चिल्ला रहा था तो उसने जाने से पहले ही हिरन का वह मॉस क्यों नहीं खा लिया?

या फिर उसको अपना कम्बल इन्याना से वापस लाना ही नहीं था। पर उसने अपनी बेवकूफी में ऐसा कुछ भी नहीं किया।

वह रो पड़ा पर उसके ऑसुओं ने दयालु का दिल नहीं पिघलाया। उसके हाथ नहीं हिलाये क्योंकि वे तो एक मतलबी के ऑसू थे। वह सबको देने वाला ऐसे मतलबी के ऑसुओं की तरफ ध्यान नहीं देता।

12 ईकटोमी, दो बहिनें और लाल आलूबुखारा[53]

एक बार एक बड़े जंगल में दूर दो बहिनें अपने छोटे छोटे बच्चों के साथ रहती थीं। उन दोनों के पति मर गये थे सो वे अपने बच्चों के साथ वहॉ अकेली ही रहती थीं।

एक बार उनके घर एक मेहमान आया जिसका नाम था ईकटोमी मकड़ा।

ईकटोमी जब जंगल में इधर उधर घूम रहा था तो कहीं से उसको बहुत ही बढ़िया लाल आलूबुखारे मिल गये थे। उसने सोचा मैं इन आलूबुखारों को रख लेता हूँ और इन आलूबुखारों से मैं उन दोनों बहिनों को बेवकूफ बनाऊँगा। सो वह उन बहिनों के घर चला गया।

दोनों बहिनों ने उसको घर में बुलाया और बिठाया। बैठने के बाद उसने उनको वे लाल आलूबुखारे दिये। आलूबुखारे देखते ही वे बोलीं — "अरे ये तो बहुत ही अच्छे आलूबुखारे हैं। ये तुम्हें कहॉ से मिले?"

ईकटोमी अपनी जगह से उठा और एक लाल रंग के बादल की तरफ इशारा करके बोला — "उस बादल के ठीक नीचे आलूबुखारे

[53] Iktomi, Two Widows And the Red Plum – a foltale from Lakota Tribe of North America. Taken from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/Iktome-Coyote-And-The-Rock-Sioux.html

का बागीचा है। वह बागीचा इतना बड़ा है और उसमें इतने सारे और इतने लाल आलूबुखारे लगे हुए हैं कि उनकी परछाईं से ही वह बादल देखो कितना लाल हो रहा है।

वे दोनों बहिनें बोलीं — "ओह काश कोई हमारे बच्चों की अगर देखरेख कर लेता तो हम भी वहॉ जा कर थोड़े से लाल आलूबुखारे तोड़ लाते।"

ईकटोमी बोला — "मुझे कोई जल्दी नहीं है। मैं तो खाली ही हूॅ। अगर तुम लोग जाना चाहो तो वहॉ आलूबुखारे तोड़ने जा सकती हो तब तक मैं यहॉ अपने भतीजों की देखभाल कर लूॅगा।"

ईकटोमी जिससे भी मिलता था उसी से अपना रिश्ता जोड़ लेता था। बड़ी बहिन बोली — "ठीक है भैया। ज़रा इनका ठीक से खयाल रखना। हम दोनों जल्दी से जल्दी आने की कोशिश करेंगे।"

दोनों ने एक बड़ा सा थैला उठाया जिसमें वे आलूबुखारे भर कर लातीं और उस लाल बादल की तरफ चल दीं। जैसे ही वे घर के बाहर गयीं तो ईकटोमी ने बच्चों को उनके झूलों में से निकाला और उन दोनों के सिर एक एक करके काट दिये।

फिर उसने कुछ कम्बल उठाये उनको बच्चों की शक्ल में लपेटा और उनको उनके पालनों में रख दिया।

फिर उसने बच्चों के शरीरों को काटा और एक पतीले में रख कर उसमें पानी डाल कर पतीला आग के ऊपर उबलने के लिये रख दिया।

उसने कुछ शलगम और छोटे छोटे काशीफल भी बच्चों के मॉस के साथ मिला दिये और इस तरह से उसने पतीला भर कर सूप बना लिया।

जैसे ही वह सूप खाने के लिये तैयार हुआ तो दोनों बहिनें लौट आयीं। वे थकी हुई थीं और भूखी भी थीं। साथ में उनको एक भी आलूबुखारा भी नहीं मिला था।

ईकटोमी ने जब देखा कि वे घर में घुसने वाली हैं तो उसने दो लकड़ी के कटोरों में वह सूप निकाला और जा कर दरवाजे के पास बैठ गया ताकि वह तुरन्त ही वहॉ से भाग सके।

जैसे ही वे घर में घुसीं तो ईकटोमी बोला — "बहिनों मैं अपने साथ कुछ मॉस भी लाया था सो उसको मैंने कुछ शलगम और छोटे काशीफल के साथ पका कर तुम लोगों के लिये एक पतीला भर कर सूप बना दिया है।

मुझे मालूम था कि तुम लोग जब आलूबुखारे के बागीचे से लौटोगी तो बहुत भूखी होगी। बच्चे अभी अभी सोये हैं सो तुम लोग पहले सूप पी लेना और बाद में ही उनको जगाना।"

दोनों बहिनें वाकई बहुत भूखी थीं सो वे उन दोनों सूप के कटोरों पर टूट पड़ीं। जब उनका थोड़ा सा पेट भरा तो उनमें से

एक बहिन उठ कर अपने बच्चे को देखने गयी कि वह आराम से सो रहा था या नहीं।

जब उसने कम्बल हटा कर देखा तो उसको अपने बच्चे के चेहरे का रंग कुछ अजीब सा लगा तो उसने उसका सिर कम्बल के नीचे से उठाया और लो उसका सिर उठाते ही वह तो चीख चीख कर रो पड़ी "हाय मेरा बेटा। हाय मेरा बेटा।"

उसकी चीख सुनते ही उसकी बहिन भी दौड़ी दौड़ी अपने बच्चे को देखने गयी। उसने भी अपने बच्चे को ऊपर उठाया तो वह भी चीख मार कर रो पड़ी।

उन्होंने आपस में एक दूसरे से पूछा कि यह सब किसने किया होगा। दोनों एक ही नतीजे पर पहुँचीं कि यह ईकटोमी का ही काम है क्योंकि उनके जाने के बाद केवल वही एक घर में था और दूसरा तो कोई था ही नहीं।

उन्होंने तुरन्त ही आग में से एक एक जलती हुई लकड़ी उठायी जिससे वे ईकटोमी को तब तक मार सकें जब तक वह मर न जाये और उसके पीछे भागीं।

उधर ईकटोमी को तो यह लग ही रहा था कि ऐसा ही कुछ होगा सो वहाँ से वह तुरन्त ही भाग लिया और भाग कर एक बड़े से पेड़ की जड़ में बने बिल में घुस गया।

दोनो बहिनें उस बिल में ईकटोमी का पीछा नहीं कर सकीं सो उन्होंने उसका पीछा करने का विचार छोड़ दिया और वह दिन और रात अपने बच्चों के दुख में रो रो कर गुजारी।

इस बीच ईकटोमी उस बिल के दूसरे दरवाजे से बाहर आ गया। उसने अपना चेहरा कुछ ऐसे रंगा जिससे वह पहचाना न जा सके और एक नये तरीके से सज सॅवर कर वह उन दोनों रोती हुई बहिनों के पास गया और उनसे उनके रोने की वजह पूछी।

तो उन्होंने उसको बताया कि ईकटोमी वहॉ आया था और उसने उनको आलूबुखारे दिखा कर बेवकूफ बनाया। वे बोलीं कि जब हम घर में नहीं थे तो उसने हमारे दोनों बच्चों को मार कर उनका सूप बनाया और फिर हम ही को पिला दिया।

हमको तो पता नहीं था सो हमने वह सूप पी लिया। पर जब हमको यह पता चला कि उसने हमारे साथ क्या किया है तो हमने उसको मारने की कोशिश की तो वह उस बिल में घुस गया और हम उसको उस बिल में से नहीं निकाल सके।

ईकटोमी बोला — "मैं निकालता हूॅ उसको बाहर। वह जायेगा कहॉ।"

कह कर वह उस बिल में चला गया। वहॉ जा कर उसने अपना सारा चेहरा खुरच लिया जिससे कि वह उन बहिनों को यह विश्वास दिला सके कि वह उस बिल में ईकटोमी से लड़ता रहा है।

बाहर आ कर वह बोला — "मैंने उसको मार दिया है। और देखो मैंने यह बिल भी अब काफी बड़ा कर दिया है। तुम लोग चाहो तो खुद इसके अन्दर जा कर देख सकती हो और अगर चाहो तो उसके मरे हुए शरीर से अपना बदला भी ले सकती हो।"

दोनों बेवकूफ बहिनों ने उसका विश्वास कर लिया और वे उस बिल में घुस गयीं। जैसे ही वे दोनों बहिनें बिल में घुसीं ईकटोमी ने तुरन्त ही कुछ लकड़ियॉ बटोरीं और उनसे उस बिल का मुँह बाहर से बन्द करके उनमें आग लगा दी।

वे बेचारी दोनों बहिनें उस बिल में से निकल ही नहीं सकीं और उसी बिल में जल कर मर गयीं।

इस तरह से उसने लाल आलूबुखारे का लालच दिखा कर उस पूरे परिवार को खत्म कर दिया जो इतना बेवकूफ था कि उन्होंने ईकटोमी को अपने घर में घुसने दिया।

13 ईकटोमी और कछुआ[54]

एक बार एक शिकारी पटकासा[55] कछुआ अपने नये मारे हुए शिकार हिरन के पास खड़ा था। उसने उसमें से एक लाल नोक वाला तीर बाहर निकाला।

उसका यह तीर उसके अपने तरकस में रखे हुए दूसरे तीरों से बहुत अलग था जो उसके अपने थे। इसका मतलब यह हुआ कि यह तीर किसी और का था उसका था ही नहीं। किसी दूसरे के भटके हुए तीर ने उसको मार दिया था।

पटकासा कछुआ सारी सुबह शिकार की तलाश करता रहा था पर वह केवल एक काली चिड़िया के ऊपर निगाह रखने के अलावा और कुछ कर ही नहीं सका था।

थक हार कर वह घर लौट रहा था। उसका दिल भारी था और वह नीची निगाह किये सोचता जा रहा था कि आज उसके घर में उसके भूखे परिवार को मॉस खाने को नहीं मिलेगा।

उसको लगा कि दयालु भूत उसके ऊपर मेहरबान हुए और उसको इस नये मारे हुए हिरन की तरफ ले गये ताकि उसके बच्चे भूखे न रहें।

---

[54] Iktomi and the Turtle (Story No 9) – a folktale from Native Americans of North America. Adapted from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Native_American_Folktale_45.html
Here is given the book "Old Indian Legends", by Zitkala-Sa. Boston, Jinn and Company. 1901

[55] Patkasa is the name of the turtle

जब पटकासा कछुआ रास्ते में इस हिरन से टकराया तो उसके मुँह से निकला — "ऐसा लगता है कि भली आत्माओं ने मुझे इधर भेज दिया है।" और यह कहते हुए वह उस शिकार पर झुक गया।

तभी उसको एक आवाज सुनायी दी — "कैसे हो मेरे दोस्त?" और किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रखा।

यह कोई आत्मा नहीं थी बल्कि यह तो बूढ़ा ईकटोमी था। पटकासा कछुए ने हिरन पर झुके झुके ही जवाब दिया — "कैसे हो ईकटोमी दोस्त?"

ईकटोमी उसकी तरफ मुस्कुराते हुए बोला — "अरे वाह तुम तो बड़े होशियार शिकारी हो।"

अचानक पटकासा कछुए की काली ऑखें चमकीं और उसने उससे कहा — "क्या सचमुच तुम ऐसा सोचते हो?"

"हॉ तुम तो सचमुच में बहुत ही होशियार शिकारी हो। चलो एक छोटा सा मुकाबला रखते हैं। देखते हैं कि कौन इस हिरन के एक भी बाल को छुए बिना इसके ऊपर से कूद जाता है।"

अपने हाथ की मोटी मोटी हथेलियों को मलते हुए पटकासा कछुआ बोला — "ओह मैं तो इस तरह से इसके ऊपर से नहीं कूद सकता।"

"कायरों की तरह से शक मत करो। तुम तो एक बहुत ही होशियार आदमी हो जिसको कोई भी काम करने में मुश्किल नहीं होती।"

यह कहते हुए वह पटकासा कछुए को कुछ दूरी पर ले गया। पटकासा कछुआ यह देख कर कुछ परेशान सा हो गया और हॅसने लगा।

ईकटोमी बोला — "अब पहले तुम कूदो।"

पटकासा कछुए ने अपने होठ काटते हुए अपने दोनों हाथों की मुट्ठी भींची फिर दोनों हाथ हिलाये और फिर जैसे ही वह कूदने के लिये भागा कि ईकटोमी बीच में आ गया और बोला — "जो भी जीतेगा यह हिरन वही खायेगा।"

अब ना कहने का तो समय ही नहीं था उसके लिये तो बहुत देर हो चुकी थी। और पटकासा कछुए को भी हिरन हारना मंजूर था पर अपने आपको कायर कहलवाना नहीं सो वह अभी भी अपने छोटे छोटे हाथ हिलाता हुआ बोला "ठीक"।

आखिर उसने कूदने के लिये भागना शुरू किया। उसके कदम उतने छोटे और इतने तेज़ थे कि ऐसा लग रहा था कि वह तो केवल जमीन में ही ठोकर मार रहा हो। और वह कूदा पर वह एक डंडी के ऊपर से ठोकर खा गया और हिरन के बगल में जा कर गिर गया।

उसको गिरता देख कर ईकटोमी यह बहाना करते हुए बड़ी ज़ोर से बोला जैसे उसको उसके गिरने पर बहुत ही दुख हुआ हो "अरे रे रे।"

फिर उसको उसके पैरों पर खड़ा करते हुए वह बोला — "अब कूदने की बारी मेरी है।"

जैसे ही ईकटोमी ने यह कहा वैसे ही वह उस हिरन के ऊपर से कूद गया। पटकासा कछुए की पीठ पर हाथ मार कर वह हॅस कर बोला — "अब यह शिकार मेरा है। ज़रा तुम इसको देखते रहना तब तक मैं अपने बच्चों को ले कर आता हूँ।ः

यह कह कर वह लम्बी लम्बी घास के बीच में से हो कर भाग गया। पटकासा कछुआ उन लोगों के कहे पर यकीन कर लेता था जो योजनाऐं बनाते थे और जो कोई उससे कोई भी काम करने के लिये कहता था उसका काम करने के लिये हमेशा तैयार हो जाता था।

पर इस बार उसने उसको यह जवाब नहीं दिया "हॉ मेरे दोस्त।" उसको लगा कि ईकटोमी ने उसकी तारीफ करने वाले शब्दों से उसका बेवकूफ बनाया है।

उसने अपनी नाक ईकटोमी की तरफ यह कहने के लिये घुमायी "ओह नहीं ईकटो। मैंने तुम्हारी बात ही नहीं सुनी।" पर तब तक तो ईकटोमी उसकी नजरों से काफी दूर जा चुका था।

पर जल्दी ही उसे कुछ आवाजों की फुसफुसाहट सुनायी दी। उसको लगा कुछ लोग हॅस रहे थे और यह हॅसी तेज़ और और तेज़ होती जा रही थी। जल्दी ही वहॉ बहुत सारे लोग इकट्ठा हो गये।

वह बूढ़ा ईकटोमी अपने बच्चों को लिये वहॉ आ पहुॅचा था जहॉ वह पटकासा कछुए को छोड़ कर गया था पर वहॉ तो कुछ भी नहीं था। वह सारी जगह खाली पड़ी थी। न तो वहॉ पटकासा था और ना ही हिरन। यह देख कर बच्चे तो चिल्लाने लगे।

पिता ईकटोमी ने अपने बच्चों से कहा — "शान्त हो जाओ मेरे बच्चो। मुझे पता है कि यह पटकासा कहॉ रहता है। तुम लोग मेरे पीछे पीछे आओ और मैं तुमको उस कछुए के घर ले चलता हूॅ।"

कह कर वह एक तंग सड़क पर एक नदी की तरफ भाग गया। उसके पीछे पीछे रोते हुए उसके बच्चे भी भागे।

कुछ दूर जाने पर ईकटोमी ज़ोर से फुसफुसाया — "देखो वह

वह रहा। वह देखो वह हिरन का मॉस भून रहा है। वहीं उसका घर[56] है। और यह आग उसके सामने वाले ऑगन में जल रही है।"

बच्चे ईकटोमियों ने अपनी अपनी गरदनें आगे को निकालीं और चिड़ियों के नये पैदा हुए बच्चों की

[56] Translated for the word "Tepee" – see its picture above. Tepee is the conical hut built for living by Native Indians.

तरह से अपनी गोल गोल काली काली ऑखें घुमायीं और वे पानी में घुस गये।

"अब तुम देखना मैं पटकासा कछुए की आग ठंडी कर दूँगा। और हिरन का मॉस ला कर तुमको दूँगा। बस तुम देखते रहना। जब तुम काले कोयले पानी के ऊपर तैरते देखो तो ज़ोर से ताली पीटना और चिल्लाना। बस उसी के बाद मैं तुम्हारे लिये उसका रसीला मॉस ले कर वापस आ जाऊँगा।"

ऐसा कह कर ईकटोमी उस नदी में कूद गया और नदी का पानी छपाछप पानी ऊपर उछल गया।

जैसे ही वह पानी शान्त हुआ उसकी सतह पर बहुत सारे काले काले धब्बे दिखायी दिये। वे सब उस नदी में नाच रहे थे। किनारे पर खड़े बच्चे ईकटोमी हॅसे और बोले "लगता है कि आग बुझ गयी।"

अपने छोटे छोटे हाथों से ताली बजाते हुए वे नदी के किनारे किनारे भागे। वे खुशी में भर कर चिल्ला रहे थे।

पानी में से एक आवाज आयी "आह"। यह पटकासा कछुए की आवाज थी। वह नदी में उगे हुए एक ऊँचे से विलो के पेड़ पर उसकी एक शाख पर पानी की तरफ देखता बैठा हुआ था। उसी शाख पर आग जल रही थी जिस पर पटकासा कछुआ हिरन का मॉस भून रहा था।

अब तक पानी फिर से शान्त हो गया था। उसकी सतह पर अब कोई काला धब्बा नहीं नाच रहा था क्योंकि वे तो ईकटोमी के पैरों की उँगलियाँ थी। ईकटोमी तो अब तक पानी में कब का डूब चुका था।

ईकटोमी के बच्चे अपने पिता को पानी में डूबा देख कर वहाँ से तुरन्त ही भाग गये।

14 सात लड़ने वाले[57]

एक बार की बात है कि सात लोग लड़ने के लिये गये – राख, आग, ब्लैडर, टिड्डा, ड्रैगन फ्लाई, मछली और कछुआ[58]।

वे सब बहुत ही तेज़ी से अपने अपने घूँसे उठा उठा कर लड़ाई के ढंग से बात कर रहे थे कि हवा का एक झोंका आया और राख को उड़ा कर ले गया।

यह देख कर दूसरे चिल्लाये — "अरे यह राख तो इससे लड़ ही नहीं सका।"

बाकी के बचे छह लड़ने के लिये और तेज़ तेज़ भागे तो वे एक गहरी घाटी में चले गये। घाटी में एक नदी बह रही थी। आग सबसे आगे जा रही थी।

सो वे सब भागते भागते उस नदी के पास पहुँचे। जैसे ही आग उस नदी के पास पहुँची वह बोली "स्स छू" और वह तो बुझ ही गयी।

दूसरे बोले — "अरे यह तो इससे लड़ ही नहीं पायी।"

अब बचे हुए पाँच लड़ने के लिये और तेज़ भागे। भागते भागते वे एक जंगल में आ पहुँचे। जब वे उस जंगल में से हो कर

---

[57] Warlike Seven – a folktale from Native Americans, North America.
Adapted rom the Web Site :
http://www.worldoftales.com/Native_American_folktales/Native_American_Folktale_50.html

[58] Ashes, Fire, Bladder, Grasshopper, Dragon Fly, Fish and Turtle

गुजर रहे थे तो ब्लैडर की आवाज सुनायी दी — "ए भाइयो तुम लोग इनसे ऊपर उठ कर चलो।"

और यह कहते कहते वह वहॉ उगे पेड़ों के ऊपर से चलने लगा। वहॉ लगे कॉटों वाले पेड़ों के कॉटे उसको लग गये और वह उनकी शाखों के बीच से नीचे गिर पड़ा।

बचे हुए चार बोले — "तुमने देखा इसे? यह भी नहीं लड़ पाया।"

इसके बाद भी वे बचे हुए लड़ने वाले वापस नहीं लौटे और लड़ने के लिये आगे बढ़ते ही गये। अब टिड्डा अपने भाई ड्रैगन फ्लाई के साथ आगे आगे चल रहा था।

चलते चलते वे लोग एक दलदल में आ पहुॅचे। वहॉ कीचड़ बहुत ज़्यादा थी। जैसे जैसे वे उस कीचड़ में चलते गये टिड्डे के पैर कीचड़ में फॅसते गये।

उसने अपनी टॉगें उसमें से खींची तो वह पास में पड़े एक लकड़ी के लट्ठे पर चढ़ गया और रोते हुए बोला — "भाइयो तुम लोग देख रहे हो न। मैं अब और आगे नहीं जा सकता। तुम लोग चलो।"

ड्रैगन फ्लाई अपने भाई के लिये रोता हुआ आगे चलता रहा। काई उसको तसल्ली नहीं दे पा रहा था क्योंकि वह अपने भाई के दुख से बहुत दुखी था। वह उसको बहुत प्यार करता था।

उसके लिये उसको जितना ज़्यादा दुख होता वह उसके लिये उतनी ही ज़ोर से रोता। इससे उसका शरीर बहुत ज़ोर से कॉप जाता।

एक बार उसने अपनी रोने से सूजी हुई लाल नाक सिनकी तो उससे इतनी ज़ोर की आवाज हुई कि उसका सिर उसकी पतली सी गरदन पर आ गया और वह नीचे घास पर गिर पड़ा।

मछली ने अपनी पूँछ ज़ोर से फटकारी और बोली — "तुमने देखा कि क्या क्या हुआ? ये लोग लड़ने वाले नहीं थे। चलो लड़ने के लिये हम लोग आगे बढ़ते हैं।"

सो मछली और कछुआ आगे बढ़ते रहे और एक कैम्प लगाने की जगह आ गये। यहॉ टैपी[59] लगाने वाले गोल गॉव के लोग चिल्लाये "हो हो। ये छोटे छोटे लोग कौन हैं और ये यहॉ क्या कर रहे हैं?"

अब इन दोनों लड़ने वालों के पास कोई हथियार तो था नहीं। दूसरे इनकी अजीब सी शक्लों ने भी उन उत्सुक लोगों को भटका दिया।

मछली उन दोनों की तरफ से बोलने वाली थी सो वह कुछ अक्षरों के बिना बोली — "शू.. ही पी[60]।"

[59] Tepee is the local type of conical huts of Native Americans in North America – see its picture above.
[60] Shu… hi pi

वे आदमी कुछ समझे नहीं सो वे बोले — "क्या क्या। क्या कहा।"

मछली फिर बोली — "शू.. ही पी।"

हर आदमी वहॉ अपने कान पर हाथ रखे उन शब्दों को ठीक से सुनने के लिये खड़ा था पर फिर भी किसी की समझ में नहीं आया कि मछली ने क्या कहा।

फिर उस भीड़ में से बात करने में चतुर ईकटोमी बाहर आया क्योंकि जहॉ भी कोई परेशानी होती वह वहीं पहुॅच जाता।

सो वह अपनी शरारती हथेलियॉ मलते हुए बोला — "ए सुनो। यह अजीब आदमी कह रहा है "जूया अनहीपी"[61] यानी कि हम लड़ने के लिये आये हैं।"

वहॉ खड़े लोग बोले — "हॅू। तो हमें इस बवकूफ जोड़े को मार देना चाहिये। ये लोग तो कुछ कर नहीं सकते। ये तो इस वाक्य का मतलब भी नहीं समझते। चलो आग जलाते हैं और इन दोनों को उबालते हैं।"

मछली बोली — "अगर तुम हम दोनों को उबालोगे तो बहुत मुश्किल में पड़ जाओगे।"

वहॉ खड़े लोग बहुत ज़ोर से हॅसे ओर बोले "देखते हैं।" और उन्होंने आग जला ली।

मछली बोली — "मुझे इतना गुस्सा कभी नहीं आया।"

[61] Zuya unhipi

कछुआ फुसफुसाया — "ऐसे तो हम मर जायेंगे।"

जब आग जल गयी और उसके ऊपर पानी उबलने लगा तो दो मजबूत हाथों ने मछली को उठाया और उसकी पूँछ पकड़ते हुए उसका मुँह नीचे करते हुए उसको उबलते हुए पानी के ऊपर ले गया और उसे उस पानी में डाल दिया।

"व्हिश" कहते हुए मछली ने बहुत सारा पानी वहाँ खड़ी भीड़ के ऊपर छिटका दिया। उस गरम पानी के छिटकने से बहुत सारे लोग जल गये और बहुत सारे देख भी नहीं सके। वे दर्द के मारे चिल्लाते हुए वहाँ से भाग निकले।

वे बोले — "इन डरावने जानवरों का हम क्या करें।"

कुछ दूसरे बोले — "इनको हम झील के कीचड़ वाले पानी में ले चलते हैं वहाँ इनको उसमें डुबो देंगे।"

सो तुरन्त ही वे उनको ले कर झील की तरफ दौड़े। वहाँ पहुँच कर उन्होंने मछली और कछुए दोनों को झील में फेंक दिया।

कछुआ तुरन्त ही झील के बीच की तरफ तैर गया। वहाँ पहुँच कर वह पानी में से बाहर की तरफ झाँका और भीड़ की तरफ हाथ हिलाते हुए बोला — "यही तो वह जगह है जहाँ मैं रहता हूँ। यही मेरा घर है।"

मछली भी वहॉ इतनी तेज़ी से इधर उधर तैरी कि वहॉ से उसने बहुत सारा पानी छिटका कर बाहर फेंक दिया। वह बोली "ई हैन[62]। मैं यहीं तो रहती हूँ।"

यह सुन कर तो लोग डर गये और बोले — "अरे यह हमने क्या किया। यह तो हमने उलटा ही कर दिया।"

उनका एक अक्लमन्द सरदार बोला — "खाने वाला इया[63] आयेगा ओर इस झील को खा जायेगा।"

सो वहॉ से एक आदमी भागा गया और खाने वाले इया को ले आया। इया वहॉ सारा दिन उस झील का पानी पीता रहा जब तक उसकी जमीन दिखायी नहीं देने लगी। इससे मछली और कछुआ दोनों कीचड़ में फॅस गये।

इया बोला — "अब इनका मैं कुछ नहीं कर सकता।"

यह सुन कर तो वहॉ खड़े लोग बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगे।

ईकटोमी पानी में चल रहा था सो इया ने उसको भी निगल लिया था। अब वह इया के अन्दर से आसमान की तरफ देख रहा था।

क्योंकि इया के पेट में झील का पिये पानी इतना ऊॅचा था कि हुए पानी की सतह आसमान को छू रही थी। ईकटोमी ने आसमान

[62] E Han

[63] Iya, the Eater

के उस गोले के गहरे हिस्से की तरफ देख कर सोचा मैं उस तरफ चलता हूँ।

उसने इया के पेट में अपना चाकू घुसाया तो उसके पेट में भरा हुआ झील का सारा पानी नीचे गिर पड़ा जिससे सारा गॉव डूब गया।

यह पानी जब झील की अपनी जगह पर गिरा तो वहॉ फिर पानी ही पानी हो गया और मछली और कछुआ फिर से कीचड़ में से बाहर निकल आये।

वे फिर जीत का डंका बजाते हुए गाते नाचते अपने अपने घर वापस चले गये।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**